राजस्थान

कॉमन एलिजिबिलिटी टेस्ट (CET)

HANDWRITTEN NOTES

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

राजस्थान CET

(RSMSSB)

(COMMON ELIGIBILTY TEST)

GRADUATION LEVEL

[भाग -1] भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन + राजस्थान का इतिहास + संस्कृति

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान

CET

(Graduation level)

भाग - 1

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन + राजस्थान का इतिहास + संस्कृति

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान CET (स्नातक स्तर)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर (RSMSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान CET (स्नातक स्तर)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें **/***

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 8233195718

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Online order करें ➡ https://bit.ly/rajasthan-cet-notes graduation

whatsapp करें - ➡ https://wa.link/kmk3lu

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम (2022)

राष्ट्रीय आंदोलन

(भारत + राजस्थान)

1. भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाएं 1
   - यूरोपीय कम्पनियों का आगमन
   - मराठा साम्राज्य
   - गवर्नर, गवर्नर जनरल & वायसराय
   - 1857 की क्रांति से पूर्व के विद्रोह
   - 1857 ई. का विद्रोह
   - भारत में पश्चिमी शिक्षा का उदय
   - प्रेस (भारत में पत्रकारिता का विकास)
2. 19 वीं एवं 20 वीं शताब्दी में सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलन 47
3. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन - विभिन्न अवस्थाएं 58
   - राष्ट्रीय आंदोलन के उदय के कारण :
   - कांग्रेस की स्थापना से पूर्व की अवस्थाएं : -
   - कांग्रेस की स्थापना :
   - उदारवादी आंदोलन
   - उग्रवादी आंदोलन
   - स्वदेशी आंदोलन (1905)
   - क्रांतिकारी आंदोलन
   - नेहरू रिपोर्ट (1928): -
   - क्रांतिकारी आंदोलन

- सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930)
- भारत छोड़ो आंदोलन 8 अगस्त - 1942)

4. देश के विभिन्न क्षेत्रों के योगदानकर्ता एवं उनका योगदान 88
5. 1857 की क्रांति में राजस्थान का योगदान 116
6. राजस्थान में किसान व जनजाति आंदोलन 125
7. राजनीतिक जनजागरण 138
8. प्रजामण्डल आंदोलन 148
9. राजस्थान का एकीकरण 164
10. स्वातंत्रयोत्तर राष्ट्र निर्माण - राष्ट्रीय एकीकरण 171
11. राज्यों का पुनर्गठन 176
12. नेहरु युग में सांस्थानिक निर्माण, विज्ञान एवं तकनीकी का विकास 177

राजस्थान का इतिहास

1. प्राचीन सभ्यताएं 180
2. राजस्थान के इतिहास की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ 189
3. प्रमुख राजवंश 195
4. प्रमुख राजवंशों की प्रशासनिक व राजस्व व्यवस्था 265
5. सामाजिक और सांस्कृतिक आयाम 270

कला संस्कृति

1. स्थापत्य कला की प्रमुख विशेषताएं 273
   - मंदिर
   - किले एवं महल (स्मारक)
   - राजस्थान की प्रमुख छत्तरियाँ

2. कलाएं, चित्रकलाएं और हस्तशिल्प 319
3. राजस्थानी साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियाँ एवं क्षेत्रीय बोलियाँ 342
4. मेले एवं त्यौंहार 358
5. लोक संगीत एवं लोक नृत्य 373
6. राजस्थानी संस्कृति, परम्परा एवं विरासत 403
7. राजस्थान के धार्मिक आंदोलन 414
8. लोक देवियाँ एवं लोक देवता 425
9. महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल 439
10. राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व 447

राष्ट्रीय आंदोलन
(भारत + राजस्थान)
अध्याय – I
भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाएं

- **यूरोपीय कम्पनियों का आगमन**

भारत में आने वाली यूरोपीय कम्पनियों का क्रम
पुर्तगाली→डच→ब्रिटिश→डेनिश→फ्रांसीसी→ स्वीडस

वास्कोडिगामा

- यूरोपीय शक्तियों में पुर्तगाली कम्पनी ने भारत में सबसे पहले प्रवेश किया। **भारत में आने के लिए इन्होंने नये समुद्री मार्ग की खोज की।** पुर्तगाली व्यापारी वास्कोडिगामा ने 17 मई 1498 में भारत के पश्चिमी तट पर अवस्थित बंदरगाह कालीकट पहुँचकर की। बन्दरगाह पर कथडाबू नामक स्थान पर पहुँचा।
- वास्कोडिगामा का स्वागत कालीकट के शासक जमोरिन ने किया। **पुर्तगालियों के भारत आगमन से भारत एवं यूरोप के मध्य व्यापार के क्षेत्र में एक नये युग का सूत्रपात हुआ।**
- भारत आने और जाने में हुए यात्रा व्यय के बदले में उसने 60 गुना अधिक धन कमाया। धीरे – धीरे अन्य पुर्तगाली व्यापारी भारत में आने लगे भारत में कालीकट, गोवा, दमन दीव और हुगली के बन्दरगाहों पर पुर्तगालियों ने अपनी व्यापारिक कोठियां स्थापित की
  नोट :- पेट्रो अब्रेज केब्रोल भारत पहुँचने वाला दूसरा पुर्तगाली था।
  1502 ई. में वास्कोडिगामा पुनः भारत आया था।
- पुर्तगाली :- **1503 में पुर्तगालियों ने अपनी पहली फैक्ट्री कोचीन में स्थापित की थी।**
- दूसरी फैक्ट्री की स्थापना 1505 ई. में कन्नूर में की गई।

फ्रांसिस्को डी. अल्मोड़ा [1505 – 1509]

- **यह भारत में प्रथम पुर्तगाली गवर्नर / वायसराय बनकर आया था।** इसने 1509 में मिस्र, तुर्की व गुजरात की संयुक्त सेना को पराजित कर दीव पर अधिकार कर लिया।
- इसे पुर्तगाली सरकार ने आदेश दिया था कि यह भारत में ऐसे दुर्ग का निर्माण करे जिनका उद्देश्य बस केवल सुरक्षा न होकर हिन्द महासागर के व्यापार पर पुर्तगाली नियंत्रण स्थापित करना भी हो **(उसके द्वारा अपनाई नीति नीले या शांत जल की नीति कहलाई)**
- **यह पॉलिसी हिन्द महासागर के व्यापार पर पुर्तगीज नियंत्रण स्थापित करने के लिए अल्मेडा ने शुरु की थी।**
- पुर्तगाल की राजधानी –लिसवन

अल्फांसो डी. अल्बुकर्क (1509 – 1515)
भारत में पुर्तगाली शक्ति की वास्तविक नींव डालने वाला अल्फांसो डी. अल्बुकर्क था।

- जो सर्वप्रथम 1509 ई. में भारत आया और उसी समय (1509 ईस्वी) उसने कोचीन में पुर्तगालियों के प्रथम - दुर्ग का निर्माण करवाया।
- 1509 ई. में अल्बुकर्क भारत में पुर्तगालियों का गवर्नर नियुक्त हुआ।
- 1510 ई. पुर्तगालियों ने गोवा के बन्दरगाह पर अधिकार कर लिया, जो उस समय बीजापुर के यूसुफ आदिल शाह सुल्तान के अधीन था।
- **1511 ई. में अल्बुकर्क ने मलक्का और 1515 ई. में फारस की खाड़ी में अवस्थित हर्मुज बन्दरगाह पर अधिकार कर लिया।**
- अल्बुकर्क ने अपने क्षेत्र में **सती प्रथा बन्द करवा दी।**
- **अल्बुकर्क राजा राममोहन राय का पूर्व गामी था।**
- पुर्तगीजों को भारतीय स्त्रियों से विवाह के लिए अल्बुकर्क ने प्रोत्साहित किया।
- अल्बुकर्क ने पुर्तगीज सेना में भारतीयों की भर्ती प्रारम्भ की।

निन्हो डी. कुन्हा (1529-1538)
अल्बुकर्क के बाद दूसरा महत्वपूर्ण पुर्तगाली गवर्नर निन्हो डी. कुन्हा था। जिसने 1529 ई. में भारत में कार्य भार ग्रहण किया।

- **कुन्हा ने 1530 ई. में शासन का प्रमुख केन्द्र कोचीन के स्थान पर गोवा को बनाया।**

- कुन्हा ने दमन, सालसेट, चौल, बम्बई सेन्टटॉमस, मद्रास और हुगली में पुनः अपने केन्द्र स्थापित किये।
- कुन्हा ने हुगली और सैनथोमा मद्रास के पास पुर्तगाली बस्तियों को स्थापित किया ।
- **भारत में प्रथम पादरी फ्रांसिस्को जेवियर का आगमन पुर्तगाली गवर्नर मार्टिन डिसूजा 1542-1545 के समय हुआ ।**
- पुर्तगालियों ने हिन्द महासागर से होने वाले आयात निर्यात पर एकाधिकार स्थापित कर लिया ।
- मुग़ल शासक अकबर के दरबार में दो पुर्तगाली इसाई पादरियों मोंसरेट तथा फादर एकाबिवा का आगमन हुआ ।
- **भारत में तम्बाकू की खेती, जहाज निर्माण एवं तथा प्रिंटिंग प्रेस की शुरुआत पुर्तगालियों के आगमन के पश्चात् हुई ।**
- **पुर्तगालियों ने ही सन् 1556 में प्रथम प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की ।**
- 1661 ई. में तत्कालीन ब्रिटिश सम्राट (अंग्रेज) चार्ल्स द्वितीय ने पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से विवाह कर लिया और पुर्तगालियों ने चार्ल्स द्वितीय को मुम्बई द्वीप दहेज में दे दिया ।

महत्त्वपूर्ण तथ्य

- बंगाल के शासक 'मसूद शाह' द्वारा पुर्तगालियों को चटगाँव और सतगाँव में व्यापारिक कम्पनियाँ खोलने की अनुमति दी गई।
- 'अकबर' की अनुमति से हुगली में कम्पनी की स्थापना की गई ।
- शाहजहाँ ने पुर्तगालियों के अधिकार से 'हुगली' को छीन लिया था।

कार्टज आर्मेडा काफिला व्यवस्था :- यह समुद्री व्यापार पर नियंत्रण व्यवस्था थी। इसके अन्तर्गत कोई भी भारतीय या अरबी जहाज बिना 'परमिट' लिए अरब सागर में नहीं जा सकता था।
इन जहाजों में ***काली मिर्च व गोला बारूद ले जाना मना था।***

पुर्तगालियों के पतन के कारण

- पुर्तगालियों का भ्रष्ट शासन, दोषपूर्ण व्यापार प्रणाली, धार्मिक और वैवाहिक नीति, योग्य शासकों का अभाव, स्पेन द्वारा पुर्तगाल का विलय, डचों का प्रवेश एवं सैन्य चुनौती आदि पुर्तगालियों के पतन के कारण बनें ।

पुर्तगालियों की भारत को देन

- ***मध्य अमेरिका से तम्बाकू, मूंगफली, आलू, मक्का, पपीता और अमरुद का भारत में प्रवेश पुर्तगालियों ने कराया।***
- बादाम, लीची, संतरा, अनानास एवं काजू का प्रवेश अन्य देशों से भारत में पुर्तगालियों के माध्यम से हुआ।
- जहाज निर्माण तथा प्रिंटिंग प्रेस (1556 ई.) की स्थापना भारत में पुर्तगालियों ने प्रारम्भ की।
- ***पुर्तगालियों द्वारा भारत में गोथिक स्थापत्य कला का आगमन हुआ।***

डच

- डच पुर्तगालियों के बाद भारत आये।
- डच नीदरलैण्ड व हॉलैण्ड के निवासी थे।
- डचों की कम्पनी का नाम यूनाइटेड ईस्ट इण्डिया कम्पनी ऑफ नीदरलैण्ड था, की स्थापना 1602 में की थी । वास्तविक नाम वेरींगीडे ओस्त इन्डिशे कम्पनी था ।
- ***डचों ने भारत में अपनी "प्रथम फैक्ट्री" 1605 ई. में मसूली पट्टनम में स्थापित की ।***
- डचों का भारत में प्रथम दल "कार्नेलियस डी हाउटमैन के नेतृत्व में भारत आया । वह भारत आने वाला प्रथम डच नागरिक था ।
- डचों नें 1602 ई. में गुजरात, कोरोमण्डल तट एवं बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा में व्यापारिक फैक्ट्रियाँ स्थापित की ।
- डचों ने मसूली पट्टनम, पुलीकट, सूरत, कराइकल, बालासोर, नागपट्टनम और कोचीन में कोठियाँ खोली ।
- डचों ने बंगाल में पहली फैक्ट्री '1627' में पीपली - (स्थाई कम्पनी) में स्थापित की।

- ***'1653' में डचों ने हुगली के निकट चिनसुरा में अपनी फैक्ट्रियाँ स्थापित की ।***
- चिनसुरा (बंगाल) में डचों ने गुस्ताबुस नामक किले का निर्माण किया।
- इसके बाद डचों ने 'कासिमबाजार' और 'पटना' में फैक्ट्री स्थापित की।

- कोचीन और कन्नानोर डचों के प्रमुख व्यापारिक केन्द्र थे।
- '1690 ई.' के बाद पुलीकट के बदले नागपट्टनम डचों का मुख्य केन्द्र बन गया।
- **डच मुख्यतः मसालों, नील, कच्चे रेशम, वस्त्र, अफीम व शोरा का व्यापार करते थे।**
- डचों की **व्यापारिक व्यवस्था सहकारिता (Cartel) पर आधारित थी।**
- '1759' में अंग्रेजों एवं डचों के मध्य बेदरा का युद्ध हुआ, जिसमें डच पराजित हुए और उनका भारत से अन्तिम रुप से पतन हो गया।
- बेदरा के युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व लार्ड क्लाइव ने किया।

- **नोटः- 'मसूली पट्टनम और सूरत से' डच 'नील' का निर्यात करते थे ।** भड़ौंच बन्दरगाह से डच कपड़े का निर्यात करते थे।
- पुलीकट में डच अपने स्वर्ण पैगोडा (सिक्के) डालते थे ।
- सूती कपड़ा, रेशम, अफीम तथा शोरा बंगाल से डचों द्वारा निर्यात किये जाते थे।
- भारत में अफीम डचों द्वारा जावा और चीन में निर्यात किया जाता था।
- डच फैक्ट्रियों के प्रमुखों को फैक्टर कहा जाता था। डच कम्पनी के निदेशकों को भद्रजन XVII कहा जाता था।

- **अंग्रेज**

  भारत आने वाला प्रथम अंग्रेज यात्री जॉन मिल्डेन हॉल था जो स्थल मार्ग से '1597' में आया था।
- भारत में कैप्टन हॉकिन्स '1608 ई.' में समुद्री मार्ग से होकर (Red Dragon) नामक व्यापारिक जहाज से सूरत बन्दरगाह पर आया।
- हॉकिन्स प्रथम अंग्रेज था जिसने भारत की भूमि पर समुद्री मार्ग से प्रवेश किया था ।
- 1599 ई. में लन्दन में व्यापारियों के एक समूह ने The Governor and company of merchants of trading into the east Indies नामक कम्पनी की स्थापना पूर्व के देशों के साथ व्यापार करने हेतु की।
- 31 दिसम्बर 1600 ई. में ब्रिटेन की महारानी एलीजाबेथ प्रथम ने एक शाही फरमान देकर इस कम्पनी को '15 वर्षों' के लिए पूर्व के देशों के साथ व्यापार करने की अनुमति प्रदान की।
- ईस्ट इंडिया कम्पनी ने '1608 ई.' में सूरत में एक व्यापारिक कोठी खोली।
- जेम्स प्रथम के एक पत्र के साथ कैप्टन हॉकिन्स को '1608' में भारत भेजा।
- '1609 ई.' में कैप्टन हॉकिन्स बादशाह जहाँगीर से आगरा में मिला था।
- **जहाँगीर ने हॉकिन्स को चार सौ का मनसब तथा एक जागीर और 'खान की उपाधि' दी।**
- कैप्टन हॉकिन्स तुर्की और फारसी भाषा का ज्ञाता था।
- हॉकिन्स ने जहाँगीर से सूरत में एक अंग्रेजी कम्पनी खोलने की अनुमति प्रदान कर ली, परन्तु मुग़ल दरबार में पुर्तगाली प्रतिद्वन्दी सौदाचारों के कारण वह अनुमति शीघ्र ही रद्द कर दी गई ।
- '1611 ई.' में हॉकिन्स इंग्लैंड लौट गया।
- '1613 ई.' में जहाँगीर ने अंग्रेजों को सूरत में स्थाई रुप से एक कोठी खोलने की अनुमति दी।
- हॉकिन्स के वापस जाने के बाद '1615 ई.' में जेम्स प्रथम ने सर टॉमस रो को मुग़ल दरबार में भेजा।
- 10 जनवरी 1616 ई. में टॉमस रो जहाँगीर से अजमेर में मिला था।
- सर टॉमस रो 3 वर्ष तक 'राजदूत' के रुप में अजमेर, माण्डू, इलाहाबाद में रहा।
- फरवरी 1619 में सर टॉमस रो इंग्लैंड वापस चला गया।
- 1623 ई. तक अंग्रेजों ने सूरत, भड़ौंच, अहमदाबाद, मसूली-पट्टनम, आगरा और अजमेर में कोठियाँ स्थापित कर ली थीं ।
- **1640 ई. में अंग्रेजों ने मद्रास नगर की स्थापना की** और आत्मरक्षा के लिए वहाँ एक दुर्ग का निर्माण कराया और उसका नाम **'सेंट जार्ज का किला' ('फोर्ट सेंट जार्ज)** रखा।
- 1651 ई. में बंगाल में व्यापार विस्तार करने के उद्देश्य से ब्रिजमैन के नेतृत्व में हुगली में भी एक कोठी खोली।
- हुगली के बाद कासिम बाजार, पटना तथा राजमहल में अंग्रेजी फैक्ट्रियाँ स्थापित की ।
- **1661 ई. में ही चार्ल्स द्वितीय को पुर्तगाली राजकुमारी केथरीन से विवाह करने के उपलक्ष्य में दहेज के रूप में बम्बई बन्दरगाह मिला था।**

- **शिवाजी द्वारा जमीन मापन हेतु 'कुटही' (जरीब) यंत्र का प्रयोग किया गया था।**
- मराठों को सर्वप्रथम उमरा वर्ग में शामिल करने वाला मुगल शासक जहाँगीर था।
- **मराठों की पर्वतीय सैनिक टुकड़ी को 'मावली' कहा जाता था।**
- शिवाजी के अंगरक्षकों को मावली सैनिक कहते थे।
- **औरंगजेब ने ताराबाई को 'ईमानदार' की उपाधि दी थी।**
- बालाजी बाजीराव की प्रशस्ति में यह कहा गया है कि "मराठा घोड़ों ने कन्याकुमारी से लेकर हिमालय के झरनों तक अपनी प्यास बुझाई"
- पानीपत के तृतीय युद्ध में इब्राहीम गार्दी सैनानी मराठा की ओर से था।
- **नाना साहब के नाम से बालाजी बाजीराव पेशवा को जाना जाता था।**
- अंग्रेजों द्वारा पेशवा प्रथा बाजीराव द्वितीय पेशवा के काल में समाप्त की गई थी।
- काशी पण्डित इतिहासकार ने पानीपत की तीसरी लड़ाई को स्वयं देखा था।
- **मोड़ी लिपि का प्रयोग मराठों के अभिलेखों में किया गया है।**
- **पतदाम 'नामक कर (Tax) विधवा पुनर्विवाह पर लिया जाता था।**
- अव्वल, साधारण और निम्न शब्द भूमि के लिए प्रयुक्त होते थे।
- टण्डल तथा सरटण्डल अधिकारी नौसेना विभाग से संबंधित थे।
- वित्तीय संकट के समय वसूल किया जाने वाला कर कुर्जा-पट्टी यातस्ती पट्टी' था।
- **मराठा सरदारों को दिया जाने वाला 'चौथ' आय का 66% भाग "मोकास" कहलाता था।**

- **गवर्नर, गवर्नर जनरल & वायसराय**

गवर्नर जनरल:

ब्रिटिश भारत में 1773 ई. से 1857 ई. के बीच तेरह गवर्नर जनरल आए। इनके शासनकाल में निम्नांकित मुख्य घटनाएं एवं विकास हुए-:

वारेन हेस्टिंग (1772 - 1785)

- **दोहरी शासन प्रणाली]Dual Government System (की समाप्ति) जो बंगाल के गवर्नर (राबर्ट क्लाइव द्वारा शुरू किया गया था)।**
- **प्रथम गवर्नर जनरल बंगाल का वारेन हेस्टिंग्स था।**
- 1773 ई. रेग्यूलेटिंग एक्ट ।
- 1774 ई. में रोहिल्ला युद्ध एवं अवध के नवाब द्वारा रूहेलखण्ड पर अधिकार।
- 1781 ई. का एक्ट (इसके द्वारा गवर्नर जनरल परिषद एवं कलकत्ता सुप्रीम कोर्ट न्यायिक अधिकार क्षेत्र का निर्धारण किया गया।
- 1782 में सालबाई की संधि एवं (1775-82) में प्रथम मराठा युद्ध।
- **1784 ई. का पिट्स इंडिया एक्ट।**
- **द्वितीय मैसूर युद्ध (1780-84)**
- सुरक्षा प्रकोष्ठ या घेरे की नीति का संबंध (वारेन हेस्टिंग्स एवं वेलेजली)
- 1785 ई. इंग्लैंड वापसी के बाद हाउस ऑफ लॉर्डस में महाभियोग का मुकदमा चलाया गया।
- 1784 ई. में सर विलियम जोंस एवं हेस्टिंग्स द्वारा एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाली स्थापना करना।

लॉर्ड कार्नवालिस -: 1786 - 1793 (1805)

- **1790 - 92 ई .में तृतीय मैसूर युद्ध ।**
- 1792 ई. में श्रीरंगपटनम की संधि
- **1793 ई. में बंगाल एवं बिहार में स्थायी कर व्यवस्था जमींदारी प्रथा की शुरुआत।**
- 1793 ई. में न्यायिक सुधार ।
- **विभिन्न स्तरों के कोर्ट की स्थापना ।**
- **कर प्रशासन को न्यायिक प्रशासन से अलग करना।**
- **सिविल सर्विस की शुरूआत।**

- प्रशासन तथा शुद्धिकरण के लिए सुधार।
- स्थायी बंदोबस्त प्रणाली को इस्तमरारी, जमींदारी, माल गुजारी एवं बीसवेदारी आदि नाम से भी जाना जाता है ।

सर जॉन शोर (1793 - 98):-

- स्थायी बंदोबस्त (1993) को शुरू करने में इन्होंने 'राजस्व बोर्ड अध्यक्ष के रुप में महत्वपूर्ण योगदान दिया। लेकिन उनके गवर्नर जनरल काल में कोई महत्त्वपूर्ण घटना नहीं हुई।

लॉर्ड वेलेजली (1798-1805) :-

- लॉर्ड वेलेजली 1798 से 1805 तक बंगाल का गवर्नर जनरल रहा। उसके कार्यकाल में अंतिम मैसूर युद्ध लड़ा गया।
- ***इस युद्ध के बाद मैसूर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के अधीन आ गया।***
- लॉर्ड वेलेजली के काल में ***द्वितीय मराठा युद्ध लड़ा गया था*** जिसमें अंग्रेजों की विजय हुई। यह कम्पनी राज के सबसे महत्वपूर्ण युद्धों में से एक था।
- पहले एंग्लो-मराठा युद्ध में मराठों की विजय हुई थी और दूसरे मराठा युद्ध में मराठों की पराजय हुई जिसका कारण मराठों के पास कोई अनुभवी और योग्य शासक न होना था।
- दूसरा मराठा युद्ध 1803 से 1805 तक लड़ा गया जिसके बाद मराठों का राज्य महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात, छत्तीसगढ़ के कुछ हिस्सों में ही रह गया।
- औरंगाबाद, ग्वालियर, कटक, बालासोर, जयपुर, जोधपुर, गोहाद, अहमदनगर, भरोच, अजन्ता, अलीगढ़, मथुरा, दिल्ली ये सब अंग्रेजों के अधिकार में चले गए।
- सिंधिया और भोसले ने अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली।
- ***उसने सहायक संधि की शुरुआत*** की जिसके तहत भारत के राजा ब्रिटिश सेना और अधिकारी को अपने राज्य में स्वीकार करेंगे, किसी भी विवाद में राजा ब्रिटिश सरकार को स्वीकार करेगा, वो ब्रिटिश के अलावा अन्य यूरोपियों को अपने यहाँ नौकरी पर नहीं रख सकता, इसके अलावा इस संधि में यह भी था कि राजा भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी का प्रभुत्व स्वीकार करेंगे ।
- लॉर्ड वेलेजली की सहायक संधि को सर्वप्रथम मैसूर के राजा (1799), तंजौर के राजा (1799), अवध के नवाब (1801), पेशवा (1801), बरार के राजा (1803), सिंधिया (1804), जोधपुर, जयपुर, बूंदी और भरतपुर के राजा थे।
- उसने 10 जुलाई 1800 को फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की।
- उसने 1799 में सेंसरशिप एक्ट पारित किए जिसका उद्देश्य फ्रांस की मीडिया पर नियंत्रण करना था।

नोट:

- सहायक संधि को स्वीकार करने वाला पहला शासक - अवध का नवाब (1765)
- वेलेजली की सहायक संधि को स्वीकार करने वाला प्रथम शासक - हैदराबाद निजाम (1798)

लॉर्ड मिन्टो प्रथम (1807-13):-

- मिन्टो के पहले सर जार्ज बार्लो वर्ष (1805-07) के लिए गवर्नर जनरल बना ।
- वेल्लोर विद्रोह (1806) ।
- रंजीतसिंह के साथ अमृतसर की संधि(1809)।
- 1813 ई. का चार्टर एक्ट ।

लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813-1823)

- लॉर्ड हेस्टिंग्स 1813 से 1823 तक भारत का गवर्नर जनरल रहा। ***उसके काल में दो महत्वपूर्ण युद्ध गुरखा युद्ध और तृतीय एंग्लो-मराठा युद्ध लड़े गए।***
- गुरखा युद्ध 1814 से 1816 तक लड़ा गया जिसमें ईस्ट इंडिया कम्पनी की जीत और गोरखों की हार हुई।
- गुरखाओं ने ब्रिटिश कम्पनी के क्षेत्र पर आक्रमण किया था, इस कारण गुरखा युद्ध लड़ा गया।
- इस युद्ध में अंग्रेजों की जीत और गुरखाओं की हार हुई जिसके बाद गुरखों को गोरखपुर, सिक्किम और अन्य इलाके कम्पनी को देने पड़े।
- इसके अलावा तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध भी लॉर्ड हेस्टिंग्स के समय पर लड़ा गया जिसमें अंग्रेजों की पूर्णतया विजय हुई।
- इस युद्ध के बाद मराठा साम्राज्य का अंत हो गया।
- पेशवा को कानपुर के निकट बिठूर भेज दिया गया और उसे 8 लाख प्रतिवर्ष पेंशन दी गयी। उसके

ताना भगत आंदोलन

- ताना भगत आंदोलन की शुरुआत वर्ष 1914 ई. में बिहार में हुई थी। **यह आंदोलन लगान की ऊँची दर तथा चौकीदारी कर के विरुद्ध किया गया** था।
- इस आंदोलन के प्रवर्तक 'जतरा भगत' थे, जिसे कभी बिरसा मुण्डा, कभी जमी तो कभी केसर बाबा के समतुल्य होने की बात कही गयी है।
- आंदोलन की शुरुआत 'मुण्डा आंदोलन' की समाप्ति के क़रीब 13 वर्ष बाद 'ताना भगत आंदोलन ' शुरू हुआ। **यह ऐसा धार्मिक आंदोलन था, जिसके राजनीतिक लक्ष्य थे।**
- यह आदिवासी जनता को संगठित करने के लिए नये 'पंथ' के निर्माण का आंदोलन था। ताना भगत आंदोलन में अहिंसा को संघर्ष के अमोघ अस्त्र के रूप में स्वीकार किया गया।
- बिरसा आंदोलन के तहत झारखंड में ब्रिटिश हुकूमत के ख़िलाफ संघर्ष का ऐसा स्वरूप विकसित हुआ, जिसको क्षेत्रीयता की सीमा में बांधा नहीं जा सकता था।
- **इस आंदोलन ने संगठन का ढांचा और मूल रणनीति में क्षेत्रीयता से मुक्त रहकर ऐसा आकार ग्रहण किया कि वह महात्मा गाँधी के नेतृत्व में जारी आज़ादी के 'भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ' का अविभाज्य अंग बन गया।**

पहाड़ियाँ विद्रोह

- 1770 के विद्रोह के दसक में राजमहल के पहाड़ी क्षेत्रों वर्तमान झारखंड में ब्रिटिश भू- राजस्व व्यवस्था के विरोध में पहाड़िया विद्रोह हुआ।
- **आदिवासियों के छापामार संघर्ष से परेशान अंग्रेजी सरकार ने सन् 1778 में इनसे समझौता कर इनके क्षेत्र को दामिनी कोह क्षेत्र घोषित कर दिया।**

बस्तर का विद्रोह

- **सन् 1910 में बस्तर के राजा के विरुद्ध जगदलपुर क्षेत्र में विद्रोह हुआ।** जिसका दमन ब्रिटिश सेना ने किया।
- **इस विद्रोह का मुख्य कारण वन अधिनियमों का क्रियान्वयन और सामन्ती करों का करारोपण था।**

• 1857 ई. का विद्रोह

- **कारण एवं परिणाम**
- 1857 ई. में ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह आधुनिक भारतीय इतिहास की एक अभूतपूर्व तथा युगान्तकारी घटना है। भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना छल, धोखे और विश्वसघात से हुई थी।
- भारत में जिस तरह ब्रिटिश सत्ता कायम हुई उस तरह इतिहास में और कोई सत्ता कायम नहीं हुई थी।

विद्रोह का स्वरूप

- 1857 के विद्रोह के संबंध में भिन्न भिन्न विचार देते हुए कुछ ने इसे साम्राज्यवादी विस्तार के कारण इसे सैनिक विद्रोह की संज्ञा दी है। तो कुछ ने इसे दो धर्मों अथवा दो नस्लों का युद्ध बताया है।
- सम्राज्यवादी विचार धारा के इतिहासकार सर जॉन लॉरैन्स व सर जॉन सीले ने सैनिक विद्रोह की संज्ञा दी।

विद्रोह के लिए उत्तरदायी कारण

- **गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग के शासनकाल की एक महत्वपूर्ण घटना 1857 का विद्रोह थी।**
- इसने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दी और कई बार ऐसा प्रतीत होने लगा था कि भारत में अंग्रेजी राज्य का अन्त हो जायेगा यहाँ हम 1857 ई. के विद्रोह के महत्वपूर्ण कारणों का विश्लेषण करेंगे।

राजनीतिक कारण

- अंग्रेज भारत में व्यापारी के रूप में आये थे, परन्तु धीरे-धीरे उन्होंने राज्य स्थापना तथा उसके विस्तार का कार्य आरम्भ किया। धीरे-धीरे **भारतीयों की राजनीतिक स्वतंत्रता का अपहरण होता गया और वे अपने राजनीतिक तथा उनसे उत्पन्न अधिकारों से वंचित होते गये।**
- जिसके फलस्वरूप उनमें बड़ा असंतोष फैला, जिसका विस्फोट 1857 ई. के विद्रोह के रूप में हुआ। इस क्रांति के राजनीतिक कारण निम्नलिखित थे-

(1) डलहौजी की साम्राज्यवादी नीतिः-

- 1857 की क्रांति के लिए डलहौजी की साम्राज्यवादी नीति काफी हद तक उत्तरदायी थी। **उसने विजय**

तथा पुत्र गोद लेने कई निषेध नीतियों द्वारा देशी राज्यों के अपहरण का एक कुचक्र चलाया । जिसने समपूर्ण भारत के देशी नरेशों को आतंकित कर दिया और उनके हृदय में अस्थिरता तथा आशंका का बीजारोपण कर दिया ।

- **लॉर्ड डलहौजी ने व्यपगत सिद्धान्त या हड़प-नीति को कठोरता पूर्वक अपनाकर देशी रियासतों के निःसन्तान राजाओं को उत्तराधिकार के लिए दत्तक-पुत्र लेने की आज्ञा नहीं दी** और सतारा (1848), नागपुर (1853), झांसी (1854), बरार (1854), संभलपुर, जैतपुर, बघाट, अदपुर आदि रियासतों को कथनी के ब्रिटिश-साम्राज्य में मिला लिया । उसने 1856 ई. में अंग्रेजों के प्रति वफादार अदद रियासत को कुशासन के आधार पर ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया।
- उसने अवध के नवाब वाजिद अली शाह को गद्दी से उतर दिया । उसने तंजौर और कर्नाटक के नवाबों की राजकीय उपाधियां छीन ली ।
- मुग़ल बादशाह को नजराना देने के लिए अपमानित करना । सिक्कों पर नाम गुदवाने जैसी परम्परा को डलहौजी द्वारा समाप्त करना । आदि घटनाओं ने 1857 के विद्रोह को हवा दी ।

(2) मुग़ल सम्राट के साथ दुर्व्यवहार :-

- अंग्रेजों ने भारतीय शासकों के साथ दुर्व्यवहार भी किया । उन्होंने मुग़ल सम्राट को नजराना देना व सम्मान प्रदर्शित करना बन्द कर दिया इतना ही नहीं **लॉर्ड डलहौजी ने मुग़ल सम्राट की उपाधि को समाप्त करने का निश्चय किया ।**
- उसने बहादुरशाह के सबसे बड़े पुत्र मिर्जा जवाबख्त को युवराज स्वीकार करने से इन्कार कर दिया और **बहादुरशाह से अपने पैतृक निवास स्थान लाल किले को खाली कर कुतुब में रहने के लिए कहा ।**

(3) ब्रिटिश पदाधिकारियों के वक्तव्य-: डलहौजी की साम्राज्यदी नीति के साथ-साथ कुछ अंग्रेज अधिकारियों ने ऐसे वक्तव्य दिये जिससे देशी नरेश बहुत आतंकित हो गये और अपने भावी अस्तित्व के सम्बन्ध मे पूर्ण रूप से निराश हो उठे ।

(4) नाना साहब और रानी लक्ष्मी बाई का असन्तोष :-

- झांसी की रानी लक्ष्मी बाई तथा पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब अंग्रेजों के व्यवहार से बहुत नाराज थे।
- **अंग्रेजों ने झांसी के राजा-गंगाधर राव के दत्तक पुत्र दामोदर राव को उत्तराधिकार से वंचित करके झांसी राज्य को कथनी के राज्य में शामिल कर लिया था ।**
- इस अत्याचार को रानी लक्ष्मीबाई सहन न कर सकी और क्रान्ति के समय उसने विद्रोहियों का साथ दिया ।

(5) अवध का विलय और नवाब के साथ अत्याचार :-

- अंग्रेजों ने बलपूर्वक लखनऊ पर अधिकार करके नबाव वाजिद अली शाह को निर्वासित कर दिया था और निर्लज्जतापूर्वक महलों को लूटा था ।
- बेगमों के साथ बहुत अपमानजनक व्यवहार किया गया था । इससे अवध के सभी वर्ग के लोगों में बड़ा असन्तोष फैला और अवध क्रांतिकारियों का केन्द्र बन गया।

(6) प्राचीन राजनीतिक व्यवस्था का विध्वंस :-

- अंग्रेजों की विजय के फलस्वरूप प्राचीन राजनीतिक व्यवस्था पूर्ण रूप से ध्वस्त हो गई थी ।
- **ब्रिटिश शासन से पहले भारतवासी राज्य की नीति को पूरी तरह प्राभावित करते थे परन्तु अब वे इससे वंचित हो गये ।** अब केवल अंग्रेज ही भारतीयों के भाग्य के निर्माता हो गये ।

(7) अंग्रेजों के प्रति विदेशी भावना :-

- भारतीय जनता अंग्रेजों से इसलिए भी असन्तुष्ट थी क्योंकि वे समझते थे कि उनके शासक उनसे हजारों मील दूर रहते हैं । तुर्क, अफगान और मुग़ल भी भारत में विदेशी थे लेकिन वे भारत में ही बस गये थे और इस देश को उन्होंने अपना देश बना लिया था।
- जबकि अंग्रेजों ने ऐसा कोई काम नहीं किया था। अतः भारतीयों के हृदय और मस्तिष्क से अंग्रेजों के प्रति विदेशी की भावना नहीं निकल सकी थी ।

(8) उच्च वर्ग में असंतोषः- देशी राज्यों के नष्ट हो जाने से न केवल उनके नरेशों का विनाश हुआ जबकि उच्च वर्ग के लोगों की स्थिति पर भी बड़ा घातक प्रहार हुआ ।

प्रशासनिक कारण-

(1) नवीन शासन-पद्धति को समझने में कठिनाई होना :- भारतीय जिस शासन को सदियों से देखते आ रहे थे, वह समाप्त कर दिया गया था । नई शासन-पद्धति को समझने में उन्हें कठिनाई आ रही थी तथा, उसे वे शंका की दृष्टि से देखते थे ।

(2) भारतीयों को प्रशासनिक सेवाओं से अलग रखने की नीति :-

- अंग्रेजों ने शुरू से ही भारतीयों को प्रशासनिक सेवाओं में शामिल न कर भेद-भाव पूर्ण नीति अपनाई । लॉर्ड कार्नवालिस का भारतीयों की कार्य कुशलता और ईमानदारी पर विश्वास नहीं था । अतः उसने **उच्च पदों पर भारतीयों के स्थान पर अंग्रेजों को नियुक्त कर दिया ।**
- परिणामतः भारतीयों के लिए उच्च पदों के द्वार बन्द हो गये । यद्यपि 1833 ई. के कम्पनी के चार्टर एक्ट में यह आवश्वासन दिया गया था कि धर्म, वंश, जन्म, रंग या अन्य किसी आधार पर सार्वजनिक सेवाओं में भर्ती के लिए कोई भेदभाव नहीं बरता जाएगा, परन्तु अंग्रेजों ने इस सिद्धान्त का पालन नहीं किया ।
- **सैनिक और असैनिक सभी सार्वजनिक सेवाओं में उच्च पद यूरोपियन व्यक्तियों के लिए ही सुरक्षित रखे गये थे ।** सेना में एक भारतीय का सबसे बड़ा पद सूबेदार का होता था जिसे 60 या 70 रुपये प्रति माह वेतन मिलता था ।
- असैनिक सेवाओं में एक भारतीय को मिल सकने वाला सबसे बड़ा पद सदर अमीन का था जिसे 500/ - रुपये प्रति माह वेतन मिलता था । उच्च पद देना अंग्रेज अपना एकाधिकार समझते थे।

(3) ब्रिटिश न्याय व्यवस्था से भारतीयों में असंतोष :-

- ब्रिटिश न्याय प्रशासन एक भिन्न प्रशासनिक व्यवस्था का प्रतीक था । विधि प्रणाली और सम्पत्ति अधिकार पूरी तरह से नये थे। न्याय प्रणाली में अत्यधिक धन तथा समय नष्ट होता था और फिर भी निर्णय अनिश्चित था ।
- भारतीय इस न्याय व्यवस्था को पसन्द नहीं करते थे । अगर एक छोटा सा किसान भी किसी जमींदार की शिकायत करता था तो जमींदार को न्यायालय में जाना पड़ता था । इस प्रकार सम्मानित व्यक्ति अंग्रेजी न्यायालयों से असंतुष्ट थे ।

(4) दोषपूर्ण भू-राजस्व प्रणाली :-

- **भू-राजस्व प्रणाली को नियमित करने के नाम पर अंग्रेजों ने अनेक जमींदारों के पट्टों की छानबीन की । जिन लोगों के पास जमीन के पट्टे नहीं मिले, उनकी जमीनें छीन ली गई ।**
- बम्बई के प्रसिद्ध इमाम आयोग ने लगभग बीस हजार जागीरें जप्त कर ली थी । लॉर्ड बैन्टिक ने तो माफी की भूमि भी छीन ली । इस प्रकार कुलीन वर्ग को अपनी सम्पत्ति व आय से हाथ धोना पड़ा ।
- **भूमि अपहरण की नीति के कारण तालुकेदारों में बड़ा असंतोष फैला और क्रांति में इन लोगों ने सक्रिय भाग लिया ।**
- किसानों के कल्याण एवं लाभ के नाम पर स्थाई बन्दोबस्त, रैयतवाड़ी व महलवाड़ी प्रणाली लागू की गई थी और हर बार किसानों से पहले की अपेक्षा अधिक लगान वसूल किया गया, जिसके कारण किसान लगातार निर्धन होकर साधारण मजदूर बनता गया ।
- अंग्रेजों की लगान-नीति के विरुद्ध इतना प्रबल विरोध था कि अनेक स्थानों पर बिना सेना की सहायता से लगान जमा नहीं किया जा सकता था।

(5) शक्तिशाली ब्रिटिश अधिकारी वर्ग का विकास :-

- **भारत में कम्पनी शासन की सर्वोच्चता स्थापित होने के साथ ही प्रशासन में एक शक्तिशाली ब्रिटिश अधिकारी वर्ग का उदय हुआ ।**
- यह वर्ग भारतीयों से मिलना पसन्द नहीं करता था और हर प्रकार से उन्हें अपमानित करता था । अंग्रेजों के इस प्रजाति भेदभाव की नीति से भारतीय क्रुद्ध हो उठे और उनका यह क्रोध 1857 ई. के विद्रोह के रूप में व्यक्त हुआ।

(6) शिक्षित भारतीयों में ब्रिटिश शासन से असंतोष :-

- शिक्षित भारतीयों को यह आशा थी कि शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ उन्हें राजनीतिक प्रशासनिक अधिकार प्राप्त हो जायेंगे ।
- लेकिन अंग्रेजों की ऐसी कोई इच्छा नहीं थी । शिक्षित भारतीयों को प्रशासन में कहीं शामिल नहीं किया गया था ।

। अतएवः डलहौजी की इस नीति से भारतीयों में बड़ा असन्तोष फैला ।

(7) जेलों में ईसाई धर्म का प्रसार :-

- अंग्रेजों ने स्कूलों के साथ-साथ जेलों को भी ईसाई धर्म प्रसार का साधन बनाया था । जेल में प्रतिदिन सुबह एक ईसाई अध्यापक ईसाई धर्म की शिक्षा देता था। 1845 ई. में एक नये नियम के अन्तर्गत जेल में सभी कैदियों का भोजन एक ब्राह्मण व्यक्ति के द्वारा सामूहिक रूप से बनाया जाना शुरू किया गया ।
- उस समय प्रत्येक कैदी अपना भोजन स्वयं बनाता था । इस नये नियम से प्रत्येक कैदी को अपनी जाति खो देने का डर लगा क्योंकि अन्तर्जातीय खान-पान को हिन्दू स्वीकार नहीं करते थे । जेल से छूटे हुए व्यक्ति को हिन्दू परिवार में शामिल नहीं करते थे।

तात्कालिक कारण

- उपरोक्त विवरण से प्रकट होता है कि भारतीय सैनिक न केवल उन सभी बातों से असन्तुष्ट थे जिनसे भारतीय नागरिक असन्तुष्ट थे बल्कि उनके असन्तोष के कुछ अलग कारण भी थे ।
- अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह की भावना सैनिकों में आ चुकी थी उसे केवल एक चिंगारी की जरूरत थी और वह चिंगारी चर्बी लगे हुए कारतूसों ने प्रदान कर दी ।
- **1856 ई. में भारत सरकार ने पुरानी बन्दूकों को हटाकर नई 'एनफील्ड राइफल' को सेना में प्रयोग करना चाहा। उसके लिए जो कारतूस बनाये गये थे उन्हें बन्दूक में भरने से पहले मुंह से खोलना पड़ता था । इन राइफलों के कारतूसों को चिकना बनाने में गाय और सूअर की चर्बी का प्रयोग होता था ।** यद्यपि अंग्रेज अधिकारियों ने इस बात को नहीं माना लेकिन सैनिकों को उन पर विश्वास नहीं हुआ ।
- यह भारतीय सैनिकों की धार्मिक भावनाओं की सूर अवहेलना थी । उन्हें यह विश्वास हो गया कि अंग्रेज हिन्दू और मुसलमान दोनों का ही धर्म भ्रष्ट करना चाहते हैं । अतः उन्होंने धर्म भ्रष्ट होने के बजाय ऐसे दूषित शासन का अन्त कर देना ही उचित समझा ।
- इस प्रकार, **कारतूसों की घटना 1857 ई. के विद्रोह का मुख्य कारण बनी ।** सैनिकों की सफलता ने भारतीय नागरिकों को भी विद्रोह करने के लिए तैयार कर दिया ।

• विद्रोह का प्रारम्भ एवं प्रसार

- **सर्वप्रथम क्रांति की शुरुआत कलकत्ता के पास बैरकपुर छावनी में हुई ।** यहाँ के सैनिकों ने नए कारतूसों का प्रयोग करने से इन्कार कर विद्रोह का झण्डा खडा कर दिया।
- **29 मार्च, 1857 ई. को एक ब्राह्मण सैनिक मंगल पाण्डे ने चर्बी वाले कारतूसों के प्रयोग की आज्ञा से नाराज होकर अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर कुछ अंग्रेज सैनिक अधिकारियों को मार डाला ।**
- परिणाम स्वरूप मंगल पाण्डे तथा उसके सहयोगियों को फांसी की सजा दे दी गई । उसके बाद 19 तथा 34 नम्बर की देशी पलटने समाप्त कर दी गई । बैरकपुर की छावनी की घटना के बाद मेरठ में भी विद्रोह शुरू हो गया ।
- सैनिकों ने कारागह से बन्दी सैनिकों को मुक्त करा लिया तथा कई अंग्रेजों का वध कर दिया गया । मेरठ से यह क्रांतिकारी दिल्ली की ओर रवाना हुए ।

दिल्ली

- 11 मई 1857 ई. को मेरठ के विद्रोही सैनिक दिल्ली पहुँचे उस समय दिल्ली में कोई अंग्रेज पलटन नहीं थी । विद्रोहियों का दिल्ली के भारतीय सैनिकों ने स्वागत किया और वे भीड़ के साथ शामिल हो गये । जैसे ही उन्होंने अपने सभी अंग्रेज अधिकारियों की हत्या कर दी ।
- **विद्रोहियों ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया और बहादुर शाह द्वितीय को नेतृत्व स्वीकार करने की अपील की ।** मुग़ल बादशाह ने संकोच किया तथा मेरठ के विद्रोह और विद्रोहियों के दिल्ली पहुँचने की सूचना आगरा में लेफ्टिनेंट गवर्नर को भिजवाई ।
- लेकिन अंत मे विवश होकर उन्होंने क्रांतिकारियों का नेतृत्व करना स्वीकार कर लिया । अंग्रेज दिल्ली से भाग गये और दिल्ली पर मुग़ल सम्राट बहादुर शाह की पताका फहराने लगी ।

- मुग़ल शहज़ादों मिर्ज़ा मुग़ल , मिर्ज़ा खिज़िर, सुल्तान और मिर्ज़ा अबूबकर ने संयोग से प्राप्त इस अवसर से पूरा-पूरा लाभ उठाया ।
- उन्हें लगा कि यह उनके वंश के पुराने गौरव को पुनः प्रतिष्ठित करने का मौका है । मेरठ में विद्रोह और दिल्ली पर अधिकार की खबर पूरे देश में फैल गई और कुछ ही दिनों में उत्तर भारत के अधिकांश भागों में क्रांति का प्रसार हो गया।

अवध

- **मेरठ** की घटनाओं की सूचना 14 मई को और दिल्ली पर क्रांतिकारियों के अधिकार की खबर 15 मई को लखनऊ पहुँची । उस समय सर **हेनरी लॉरेंस वहां का चीफ कमिश्नर था ।**
- उसने विद्रोह के संकट से बचने के लिए आवश्यक प्रयास किये लेकिन लखनऊ में भी विद्रोह को लम्बे समय तक टाला नहीं जा सका ।
- 30 मई को लखनऊ से कुछ मील दूर मुरिआव छावनी में देशी सिपाहियों ने यूरोपीय फौज पर सशस्त्र हमला कर दिया । इसमें कुछ लोगों की जान गई ।
- **विद्रोह लखनऊ तक ही सीमित नहीं रहा । जल्द ही यह सीतापुर, फैजाबाद, बनारस, इलाहाबाद, आजमगढ़, मथुरा, मैनपुरी, अलीगढ़, बुलन्दशहर, आगरा, बरेली, फर्रुखाबाद, बिन्नौर, शाहजापुर, मुज्जफरनगर, बदायूँ, दानापुर आदि क्षेत्र में, जहां भारतीय सैनिक तैनात थे, वहाँ फैल गया ।**
- सेना के विद्रोह करने से पुलिस तथा स्थानीय प्रशासन भी तितर-बितर हो गया । जहां भी विद्रोह भड़का सरकारी खजाने को लूट लिया गया और गोले-बारूद पर कब्जा कर लिया गया । बैंरकों, थाने के राजस्व कार्यालयों को जला दिया गया, कारागार के दरवाजे खोल दिये गये ।
- गाद के किसानों तथा बेदखल किये गये जमींदारों ने साहूकारों एवं नये जमींदारों, जिन्होंने उन्हें बेदखल किया था हमला कर दिया । उन्होंने सरकारी दस्तावेजों तथा साहूकारों के बही खातों को नष्ट कर दिया अथवा लूट लिया ।
- इस प्रकार क्रांतिकारियों ने औपनिवेशिक शासन के सभी चिन्हों को मिटाने का प्रयास किया । जिन क्षेत्रों के लोगों ने विद्रोह में भाग नहीं लिया उनकी सहानुभूति भी विद्रोहियों के साथ थी।

कानपुर

- **5 जून 1857 ई. को कानपुर में विद्रोह हुआ। कानपुर में क्रांति का नेतृत्व नाना साहब ने किया।** उन्होंने 26 जून को कानपुर पर अधिकार स्थापित कर लिया और स्वयं को पेशवा घोषित कर दिया।
- बहादुर शाह को नाना ने भी भारत का बादशाह मान लिया था । **कानपुर के अंग्रेज सेनापति कीलर को नाना साहब ने आत्म-समर्पण करने पर बाध्य कर दिया ।**
- जुलाई 1857 में हैवलाक ने कानपुर पर आक्रमण कर दिया और घोर संघर्ष के बाद कानपुर पर अधिकार कर लिया।
- **नवम्बर 1857 में ग्वालियर के 20,000 क्रांतिकारी सैनिकों ने तात्या टोपे के नेतृत्व में कानपुर पर आक्रमण कर दिया** और वहाँ पर सेनापति विंड्हम को पराजित करके 28 नवम्बर को कानपुर पर पुनः प्रभुत्व स्थापित कर लिया ।
- दुर्भाग्यश दिसम्बर 1857 को कैम्पवेल ने क्रांतिकारियों को बुरी तरह पराजित किया और कानपुर पुन : अंग्रेजों के हाथ में आ गया । नाना साहब वहां से नेपाल चले गये ।

झांसी

- **झांसी में विद्रोह का प्रारम्भ 5 जून 1857 को हुआ। रानी लक्ष्मीबाई के नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने बुन्देलखण्ड तथा उसके निकटवर्ती प्रदेश पर अपना अधिकार कर लिया ।**
- **बुन्देलखण्ड में विद्रोह के दमन का कार्य ह्यूरोज नामक सेनापति को सौंपा गया था ।** उसने 23 मार्च 1857 को झांसी का घेरा डाल दिया ।
- एक सप्ताह तक युद्ध चलता रहा लक्ष्मीबाई के मोर्चा संभालने वालों में सिर्फ ब्राह्मण एवं क्षत्रिय ही नहीं थे कोली, काछी और तेली भी थे ये महाराष्ट्रीय और बुन्देलखण्डी थे ये पठान तथा अन्य मुसलमान थे ।
- पुरुषों के साथ हर मोर्चे पर महिलाएं भी थी । झांसी की सुरक्षा असंभव समझकर लक्ष्मीबाई 4 अप्रैल 1858 को अपने दत्तक पुत्र दामोदर को पीठ से बांधकर एक रक्षक दल के साथ शत्रु सेना को चीरती हुई कालपी पहुँची ।

अध्याय – 2

19 वीं एवं 20 वीं शताब्दी में सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलन

- उदय के कारण आधुनिक शिक्षा प्राप्त बुद्धिजीवियों में चेतना आई की औपनिवेशिक शासन का मूल कारण भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक ढांचे में मौजूद कुरुतियाँ हैं अतः उन्हें दूर करना चाहिए।
- इस क्रम में सामाजिक सुधार आंदोलन प्रारंभ हुआ स्थायीकरण की प्रवृत्ति ने भी भारतीयों को अपने धर्म एवं समाज को बचाने के लिए प्रेरित किया वस्तुतः ईसाई मिशनरी भारतीयों के पिछड़ेपन का कारण उनके परम्परागत धर्म को बताते थे अतः भारतीय धर्म और समाज सुधार से समाज को कर्मकांड मुक्त करने पर बल दिया।
- पश्चिमी मानवतावादी चिंतन ने भारतीयों में सुधारों के प्रति चेतना जागृत की वस्तुत यूरोप के आधुनिक चिंतन में भारतीयों को भी मानवतावादी दृष्टिकोण से युक्त किया इसी क्रम में सुधारकों ने मानव की एकता पर बल देते हुए छुआछूत अस्पृश्यता पर चोट की पत्र-पत्रिकाओं ने भी सुधार आंदोलन को प्रेरित किया।
- वस्तुतः पत्र-पत्रिकाओं में अंग्रेजों द्वारा भारतीयों के प्रति किए जाने वाले अपमान जनक व्यवहारों का उल्लेख रहता था फलतः अपने धर्म और समाज में व्याप्त सती प्रथा, छुआछूत जैसी परम्पराओं को समाप्त कर समाज को स्वच्छ बनाकर उस पर अपमान से बचने का प्रयास किया गया। इसी क्रम में सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन शुरू हुआ

स्वरूप

1. मूल्य का सामाजिक सुधार स्वरूप

इस आंदोलन का मूल लक्ष्य सामाजिक सुधार करना था वस्तुतः समाज में मौजूद कुरुतियाँ का समर्थन धर्म के आधार पर किया जाता था अतः धर्म में सुधार के बगैर सामाजिक सुधार संभव नहीं था इस दृष्टि से यह मूलतः सामाजिक सुधार आंदोलन था।

2. मध्यम वर्गीय स्वरूप

- यह आंदोलन मध्यम वर्ग के स्वरूप से मुक्त दिखाई देता है वस्तुतः सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन का नेतृत्व मध्यमवर्गीय के हाथों में था।
- आंदोलन का प्रसार भी नगरीय क्षेत्रों में रहा प्रचार प्रसार हेतु सुधारकों ने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों का प्रकाशन किया और जिसकी पहुँच मध्यम वर्ग तक थी इस तरह सुधारकों द्वारा उठाई गई कुछ मांगे जैसे सती प्रथा बहू पत्नी प्रथा की समाप्ति प्राय से संबंधित है इस राष्ट्रीय से यहाँ आंदोलन का स्वरूप मध्यम वर्गीय दिखाई देता है।
- दूसरी तरफ सुधारकों ने समाज में अंधविश्वास वर्ण व्यवस्था छुआछूत की भावना और धार्मिक आडम्बरों पर चोट किया तथा मानव की क्षमता पर बल दिया फलक में मानव की एकता का मार्ग प्रशस्त हुआ शिक्षा पर बल देने से जागरूकता बढ़ी जो राष्ट्रीय चेतना के विकास में सहायक सिद्ध हुई इस दृष्टि से यह आंदोलन लोकप्रिय स्वरूप से मुक्त हो जाता है।

3. शैक्षणिक स्वरूप

- यह आंदोलन शैक्षणिक स्वरूप से मुक्त था प्राय सभी सुधारकों ने शिक्षा पर बल दिया इसी क्रम में **राजा राममोहन राय ने कोलकाता में हिन्दू कॉलेज की स्थापना की तो आर्य समाज ने डी.ए.वी. कॉलेज की स्थापना की तो सैयद अहमद खां ने अलीगढ़ में मुस्लिम कॉलेज की स्थापना की** इतना ही नहीं सुधारकों ने महिला शिक्षा पर बल दिया।
- विभिन्न पुस्तकों में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जो आंदोलन के शैक्षिक स्वरूप को उजागर करता है।

4. नारीमुक्ति का स्वरूप

- 19 वीं सदी के सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन के केन्द्र में नारी मुक्ति का चिंतन दिखाई देता है वस्तुतः अनेक सामाजिक कुरीतियों जैसे विधवा विवाह बाल विवाह सती प्रथा देवदासी प्रथा पर्दा प्रथा आदि नारी से संबंधित हैं अर्थात् यह नारी अधिकारों को सीमित करती थी।
- अतः सुधारकों ने इन कुरीतियों पर चोट कर नारी मुक्ति का प्रयास किया इसी क्रम में **सुधारकों के प्रयास से सती प्रथा निरोधक कानून बाल हत्या निरोधक कानून विधवा पुनर्विवाह अधिनियम आदि का निर्माण हुआ।**
- साथ ही सुधारकों ने नारी शिक्षा पर बल देकर उसे जागरूक और आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया

इस दृष्टि से यह आंदोलन नारी मुक्ति स्वरूप से मुक्त दिखाई देता है ।

5. सुधारवादी स्वरूप

- यह आंदोलन क्रांतिकारी नहीं सुधारवादी स्वरूप लिए हुए था वस्तुतः सुधारकों ने सामाजिक धार्मिक बुराइयों को दूर करने के क्रम में अपने धर्म के आडम्बरों पर चोट की किन्तु उन्होंने कहीं भी अपने धर्म को छोड़ने या नया धर्म चलाने की बात नहीं की राजा राममोहन राय हो या सैयद अहमद खान सभी ने अपने धर्म में रहते हुए सुधारों की बात की ।

6. मध्यकालीन भारतीय धर्म सुधार आंदोलन से भिन्न स्वरूप

19वीं सदी का सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन 15 वीं सदी- 16 सदी के मध्य कालीन कवि नानक जैसे लोगों द्वारा चलाए जा रहे सुधार आंदोलन इस रूप से भिन्न है कि उन्नीसवीं सदी में कानून निर्माण द्वारा सुधारों पर बल दिया गया और इन सुधारों में पश्चिमी प्रेरणा भी शामिल थी साथ ही सुधारकों ने शिक्षण संस्थानों की स्थापना की ।

7. भारतीय पुनर्जागरण के रूप में

- 19 वीं सदी का सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन अपनी कुछ विशेषताओं के आधार पर यूरोपीय पुनर्जागरण के समान दिखाई देता है वस्तुतः भारतीय पुनर्जागरण में मानवतावाद तर्क व विवेक पर बल दिया गया है तथा कर्मकांड की आलोचना की गई ।
- इसी तरह भारत में भी समाज सुधारकों ने मानवतावाद पर बल देते हुए कर्मकांड की आलोचना की । अक्षय कुमार दत्त ने चिकित्सा विज्ञान के तर्क के आधार पर बाल विभाग को एक समस्या बताया तो साथ ही सुधारकों ने आधुनिक शिक्षा पर बल देते हुए शिक्षा केंद्रों की स्थापना की इस दृष्टि से सुधार आंदोलन को भारतीय पुनर्जागरण के रूप में देखा जा सकता है।
- किन्तु यूरोपीय पुनर्जागरण के कई तत्व भौगोलिक खोज वैज्ञानिक आविष्कार कला के क्षेत्र में विशेष प्रगति भारतीय सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन में दिखाई नहीं देती इस आधार पर आंदोलन को पूर्णता यूरोपीय पुनर्जागरण के समान नहीं कहा जा सकता।

योगदान

1. भारतीयों में आत्मविश्वास व आत्म सम्मान की भावना जागृत हुई वस्तुतः सुधार आंदोलन ने लोगों में स्वतंत्रता समानता की भावना जागृत हुई ।
2. सुधार आंदोलन ने भारतीयों को उनकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से अवगत कराया जिससे उनमें हीनता की भावना कम हुई।
3. आंदोलन में आधुनिक शिक्षा पर बल दिया और सुधारकों ने पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जिससे लोगों के विचार एक दूसरे तक पहुँच सके साथ ही विभिन्न शिक्षण संस्थानों की स्थापना हुई जिससे समाज में जागरूकता बढ़ी और राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ।
4. सुधार आंदोलन ने स्वराज्य से देशी की अवधारणा को लोकप्रिय बनाया इसी क्रम में आर्य समाज ने भारत भारतीयों के लिए नारा दिया फलतः राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ
5. कर्मकांड और आडम्बर पर चोट करने से धर्म का सरलीकरण हुआ जाति बंधन कमजोर हुआ अंधविश्वास पर चोट हुई इससे मानव की एकता को बढ़ावा मिला फलतः राष्ट्रीय चेतना का आधार निर्मित हुआ।
6. नारी मुक्ति के क्षेत्र में आंदोलन का प्रयास सराहनीय रहा सुधारकों के प्रयासों से सामाजिक कुरीतियों को रोकने के लिए अनेक कानून बने।

सीमाएं

- आंदोलन का प्रसार नगरी क्षेत्रों तक सीमित रहा और यह मध्यमवर्गीय स्वरूप से मुक्त था।
- अतीत पर अत्यधिक बल देने से तार के दृष्टिकोण को चोट पहुँची वस्तुतः भारत का गुणगान करते हुए हिन्दू धर्म सुधारकों ने उसे प्राचीन काल तक सीमित रखा तो साथ ही मध्यकाल जो कि मुस्लिम शासक वर्ग से मुक्त था पतन के रूप में देखा इससे साम्प्रदायिकता बढ़ी ।
- इन सुधारकों के प्रयासों के बावजूद समाज में वर्ण व्यवस्था जनित भेदभाव अस्पृश्यता लैंगिक भेद बाल विवाह जैसी कुरीतियां मौजूद रहे।

- **विभिन्न नेता एवं संस्थाएं**

राजा राममोहन राय की उपलब्धियां 1774 से 1833

(i) पृष्ठ भूमि
- नवजागरण का अग्रदूत
- नवप्रभात का तारा
- आधुनिक भारत का पिता
- पूर्व व पश्चिम की संस्कृतियों का संश्लेषणकर्ता

(i) धार्मिक क्षेत्र
(ii) सामाजिक क्षेत्र में शिक्षा एवं पत्रकारिता
(iii) राजनीति क्षेत्र

पृष्ठभूमि

- **राजा राममोहन राय को पूर्व में पश्चिम की संस्कृतियों का संश्लेषणकर्ता कहा** गया उन्होंने पश्चिमी आधुनिक विज्ञान प्राप्त करने के लिए अंग्रेजी भाषा का समर्थन किया तो साथ ही बांग्ला भाषा का व्याकरण संकलित कर देशी भाषा को भी महत्व दिया।
- इसी तरह उन्होंने भारतीय दर्शन के उपनिषदीय चिन्तन अब ऐश्वर्य बात पर बल दिया और इस आधार पर उन्होंने मूर्ति पूजा में कर्मकांड की आलोचना की दूसरी तरफ मानव कल्याण की बात करने वाले ईसा मसीह के नैतिक के वचनों का समर्थन किया।
- इसी तरह वह प्रेस की स्वतंत्रता और व्यक्ति की स्वतंत्रता जैसे पश्चिमी अवधारणाओं को भारत में लागू करने पर बल दे रहे थे। वस्तुतः वें सोच विचार कर पश्चिम के प्रगतिशील तत्वों को अपनाने पर बल देते रहे थे इस तरह वह आधुनिकीकरण के समर्थक थे पश्चिमीकरण के नहीं।

पश्चिमीकरण

पश्चिम के विचारों बुल्लेया वस्तुओं को श्रेष्ठ मानकर उन्हें आंख मूंदकर अपनाना।

आधुनिकीकरण

पश्चिम के विचारों मूल्यों या वस्तुओं को आवश्यकतानुसार अपनाना।

आधुनिक विचार / मूल्य

संवैधानिक शासन, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, नागरिक अधिकार, प्रिंटिंग प्रेस, प्रतिनिधि सभा, समाचार पत्र, लोकतांत्रिक शासन, मानवाधिकार, कानून का शासन, व्यस्क मताधिकार, धर्मनिरपेक्षता, वैज्ञानिक खोजें / सिद्धांत।

धार्मिक के क्षेत्र में उपलब्धियां

- **राजा राममोहन राय ने मूर्ति पूजा का विरोध किया और एकेश्वरवाद को सभी धर्मों का मूल बताया।**
- उन्होंने कहा कि सभी धर्म सत्य हैं। किन्तु इसमें होने वाले कर्मकांड उन्हें दूषित करते हैं इसी क्रम में उन्होंने उपनिषद द्वारा प्रतिपादित आत्मा की अमरता के सिद्धांत को स्वीकार किया।
- **राममोहन राय ने ताराचंद्र चक्रवर्ती व चंद्रशेखर देव के सुझाव पर 1828 में कोलकाता में ब्रह्म समाज की स्थापना की** जिसके प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित हैं।

1. ईश्वर एक है और वह संसार का निर्माता है अंगरक्षक है वह निर्गुण और निराकार है
2. आत्मा अमर है।
3. आत्मिक उन्नति व ईश्वर की अनुभूति के लिए प्रार्थना आवश्यक है इसलिए मूर्ति पूजा अनावश्यक है।
4. किसी पुस्तक या व्यक्ति को मोक्ष या मुक्ति का साधन नहीं मानना चाहिए।
5. मनुष्य को अहिंसा का पालन करना चाहिए।

- धार्मिक क्षेत्र में ब्रह्म आश्रम आचरण की शुद्धता पर बल देता था इसका प्रमुख उद्देश्य हिन्दू धर्म को स्वच्छ बनाना है एकेश्वरवाद को प्रतिष्ठित करना था।
- ब्रह्म समाज के प्रत्येक सदस्य शनिवार को उपदेशआत्मक चर्चा में भाग लेते थे उनके कार्यक्रम में सभी धर्म ग्रन्थों का पाठ होता था इस तरह ब्रह्म समाज में अंधविश्वास जात-पात का विरोध करते हुए आधुनिक शिक्षा पर बल दिया।

सामाजिक क्षेत्र में

- राजा राममोहन राय ने भारत की सामाजिक कुरीतियों जैसे सती प्रथा बाल विवाह विधवा प्रथा छुआछूत आदि का विरोध किया तथा स्त्री शिक्षा पर बल दिया इसके प्रयासों से 1829 में सती प्रथा निरोधक कानून बना।

उदारवादी संघ के नाम से जाना जाता था जिसमें 'जस्टिस नामक समाचार पत्र' का प्रकाशन किया इसी आधार पर इसे जस्टिस आंदोलन कहां गया।

आत्मसम्मान आंदोलन 1925

इस आंदोलन की शुरुआत ई वी रामास्वामी नायर प्रिया ने की उन्होंने समाज में ब्राह्मणों के सर्वोच्च को चुनौती दी और निम्न जाति के लोगों को अधिकार वह राजनीतिक प्रतिनिधित्व देने की बात कही। इस आंदोलन में कहा गया कि धार्मिक कार्यक्रमों में ब्राह्मण की उपस्थिति अनिवार्य है और लोगों से अपील किया गया कि वह विवाह के अवसर पर पूजा पाठ के लिए ब्राह्मणों को आमंत्रित ना करें।

"सारांश"

- 17 मई 1498 को वास्कोडिगामा भारत आने वाला पहला पुर्तगाली था।
- 1503 ई. में पुर्तगालियों ने अपनी पहली फैक्ट्री कोचीन में स्थापित की।
- पुर्तगालियों ने ही सन् 1556 में प्रथम प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की।
- पुर्तगालियों द्वारा भारत में गोथिक स्थापत्य कला का आगमन हुआ।
- डचों ने भारत में अपनी प्रथम फैक्ट्री 1605 ई. में मसूली पट्टनम में स्थापित की।
- 1640 ई. में अंग्रेजों ने मद्रास नगर की स्थापना की।
- बन्दा बहादुर ने 1710 ई. में गुरु नानक व गुरु गोविन्द सिंह के नाम के सिक्के जारी किये।
- नादिरशाह को ईरान का नेपोलियन कहा जाता था।
- अंग्रेजों को दीवानी का अधिकार सर्वप्रथम शाह आलम द्वितीय ने दिया था।
- शिवाजी के समय 'चौथ' उपज के एक चौथाई भाग के रूप में तथा सरदेशमुखी आय का 10% के रूप में लिया जाता था।
- शिवाजी को गुरिल्ला युद्ध का प्रतिपादक कहा जाता है।
- मराठों तथा सैयद बंधुओं के मध्य हुई संधि को मराठों का मैग्नाकार्टा कहा जाता है।
- 7 मार्च 1775 ई. को बम्बई की अंग्रेजी सरकार एवं रघुनाथ राव के मध्य सूरत की संधि हुई।
- 1802 ई. में बाजीराव द्वितीय तथा अँग्रेजों के बीच बसीन की संधि हुई।
- पुरन्दर की संधि 1776 ई. में अंग्रेज सरकार और पूना दरबार के प्रतिनिधि नाना फड़नवीस के मध्य हुई।
- 13 जून 1817 ई. में पेशवा तथा अंग्रेजों के मध्य पूना की संधि हुई।
- लॉर्ड विलियम बैंटिक ने सती प्रथा को समाप्त किया।
- 1853 ई. में बंबई से थाणे के बीच प्रथम रेल चली।
- लॉर्ड कैनिंग ईस्ट इंडिया कम्पनी का अन्तिम गवर्नर जनरल था।
- रॉबर्ट क्लाइव को भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का संस्थापक माना जाता है।
- नवम्बर 1856 को भारत सरकार अधिनियम पारित किया गया।
- प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत सन् 1914 में हुई।
- भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना ए. ओ. ह्यूम ने की थी।
- गाँधी जी और अम्बेडकर के मध्य पूना पैक्ट सितम्बर 1932 में हुआ।
- द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत 1939 ई. में हुई।
- लॉर्ड डलहौजी ने रेल, डाक, तार आदि का प्रयोग भारत में शुरू किया था।
- चर्बी वाले कारतूसों की घटना 1857 ई. के विद्रोह का मुख्य कारण बनी।
- सर्वप्रथम इस विद्रोह की शुरुआत बैरकपुर छावनी से हुई।
- 1861 ई. में भारतीय नागरिक सेवा अधिनियम पारित हुआ।
- राजा राममोहन राय ने मूर्तिपूजा का विरोध किया तथा 1828 में कोलकाता में ब्रह्म समाज की स्थापना की।
- दयानन्द सरस्वती ने 1875 ई. में मुम्बई में आर्य समाज स्थापना की। इन्होंने सर्वप्रथम स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया।

- स्वामी विवेकानन्द ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की।
- केशव चन्द्र सेन के सहयोग से आत्माराम पांडुरंग मुम्बई में प्रार्थना समाज की स्थापना की।
- काँग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष एनी बेसेन्ट भी तथा पहली भारतीय महिला अध्यक्ष सरोजनी नायडू भी।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न-1. ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी किए ने भारत में पहली फैक्ट्री कहाँ खोली?

A. मछलीपट्टनम B. सूरत
C. अरमा D. कलकत्ता
उत्तर - B

प्रश्न-2. किसने वास्कोडिगामा का कालीकट में स्वागत किया?

A. गेस्पर कोरिया B. जमोरिन
C. अल्बुकर्क D. डॉन. अलमदा
उत्तर - B

प्रश्न-3. भारत में पुर्तगालियों की बस्तियों का पहला गवर्नर कौन था ?

A. वास्कोडिगामा B. फ्रांसिस्को डि अल्मीड़ा
C. अल्बुकर्क D. नीनो-ड़ी-कुंहा
उत्तर – B

प्रश्न-4. भारत में क्षेत्रीय शासन स्थापित करने वाला पहला यूरोपीय राष्ट्र था?

A. ब्रिटेन B. हॉलैण्ड
C. फ्रांस D. पुर्तगाल
उत्तर - D

प्रश्न-5. दस्तक शब्द से तात्पर्य है?

A. दंगा B. शुल्क मुक्त व्यापार
C. बंदरगाह D. बाजार
उत्तर - B

प्रश्न-6. प्लासी के युद्ध में सिराजुद्दौला के साथ किसने विश्वासघात किया था?

A. मीरजाफर B. मीर कासिम
C. अलीवर्दी खान D. सलीम मुल्ला
उत्तर - A

प्रश्न-7. कर्नाटक युद्धों में अंग्रेजों द्वारा किसे पराजित किया गया?

A. फ्रांसीसियों को B. पुर्तगालियों को
C. ड़चों एवं पुर्तगालियों को D. ड़चों को
उत्तर - A

प्रश्न-8. बंगाल का पहला गवर्नर जनरल था?

A. लॉर्ड क्लाइव B. लार्ड वारेन हेस्टिंग
C. लॉर्ड जॉन शोर D. लॉर्ड कार्नवालिस
उत्तर - B

प्रश्न-9. भारत का पहला भारतीय गवर्नर जनरल कौन था?

A. B.R. अम्बेडकर
B. सी. राजगोपालाचारी
C. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
D. डॉ. एस. राधाकृष्णन
उत्तर - B

प्रश्न-10. निम्न में से किसको आधुनिक भारत के निर्माण के रूप में जाना जाता है ?

A. लॉर्ड कार्नवालिस B. विलियम बैंटिक
C. लॉर्ड डलहौजी D. लॉर्ड कर्जन
उत्तर – c

प्रश्न-11. भारत के औपनिवेशिक काल में अधोमुखी निस्यंदन सिद्धान्त किस क्षेत्र से संबन्धित था?

A. रेल B. चिकित्सा
C. शिक्षा D. सिंचाई
उत्तर - C

अध्याय – 3

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन - विभिन्न अवस्थाएं

राष्ट्रवाद कांग्रेस की विभिन्न विचार धाराएँ विभाजन के उदय के स्थापना व स्वतंत्रता कारण
उदारवादी उग्रवादी क्रांतिकारी गाँधीवादी समाजवादी

- **राष्ट्रीय आंदोलन के उदय के कारण :**

(1)ब्रिटिश राजनीतिक आर्थिक सामाजिक नीतियाँ

- ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीतियों ने विभिन्न राज्यों को जीतकर उनकी अलग -अलग पहचान समाप्त कर वहाँ एक समान सामाजिक -राजनीतिक संरचना स्थापित की।
- इसी क्रम में भारत का एक गवर्नर जनरल नियुक्त किया गया तो साथ ही, एक समान न्यायिक प्रणाली लागू की गई। इस तरह विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले भारतीय एक सूत्र में बचे।
- वस्तुतः ब्रिटिश आर्थिक नीतियों ने भारत के विभिन्न क्षेत्र के लोगों को एक दूसरे से जोड़ दिया । दरअसल एक साझे एकजुट की उपस्थिति एवं पहचान ने विभिन्न क्षेत्र के भारतीयों को ब्रिटिश के विरुद्ध एकजुट कर दिया। फलतः राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ । ब्रिटिश के विरुद्ध एकजुट कर दिया। फलतः राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ।
- **ब्रिटिश शासन द्वारा विकसित संचार प्रणाली जैसे-रेलवे सड़क डाकतार व्यवस्थाने विभिन्न क्षेत्र के लोगों के आवागमन को आसान बनाकर आपसी संपर्क को बढ़ावा दिया ।**
- **फलतः राष्ट्रीय चेतना के विकास का आधार निर्मित हुआ। वस्तुतः रेलवे जैसे साधनों के विकास से देश** के विभिन्न क्षेत्र के बुद्धिजीवियों एवं लोगों का आपसी संपर्क आसान हुआ । इससे राजनीतिक विचारों के आदान प्रदान की प्रक्रिया को बढ़ावा मिला।
- ब्रिटिश शिक्षा नीति एवं पश्चिमी चिंतन ने भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार किया । फलत :एक भारतीय मध्यवर्ग का उदय हुआ जो ब्रिटिशऔपनिवेशिक नीतियों के स्वरूप को समझ सका और शोषण के विरुद्ध लोगों को जागरूक कर एककिया एवं मध्यवर्ग होकर बेंथम मिल, रूसो, जॉन लॉक, मोटेस्क्यू डार्विन के विचारों से परिचित हुआ और जनतांत्रिक अधिकारों की मांग करने लगा।
- इस तरह आधुनिक शिक्षा प्राप्त मध्यवर्ग ने ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की समीक्षा करके उसके औपनिवेशिक स्वरूप को उजागर कर दिया और शोषण से मुक्ति के लिए विभिन्न संगठनों की स्थापना कर उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया । इसी संदर्भ में यह कहा गया कि "भारतीयों ने पश्चिमी हथौड़े से पश्चिमी बेडियों को तोड़ डाला"।

(2) सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन :-

- 19 वीं सदी के सामाजिक-धार्मिक सुधार ने वर्ण व्यवस्था, जाति-पाँति, छुआछुत और धार्मिक आडंबरों पर चोट कर मानव की एकता पर बल दिया तो साथ ही, प्राचीन गौरवपूर्ण परंपरा को उद्घटित कर भारतीयों के अंदर हीनता की भावना को दूर कर आत्मविश्वास और सम्मान की भावना भरी।
- इसी तरह, सुधारकों ने 'स्वराज' एवं 'स्वदेशी' पर बल दिया और विदेशी शासन को किसी भी दृष्टि से सुखदायी नहीं बताया तथा इससे मुक्त होने के लिए लोगों को प्रेरित किया। इसी क्रम में, भारत भारतीयों के लिए नारा दिया गया। फलतः राष्ट्रीय चेतना के विकास को बढ़ावा मिला।

(3) पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन :-

- पत्र-पत्रिकाओं प्रकाशन से विभिन्न क्षेत्र के बुद्धिजीवियों को उनके विचारों और समस्याओं से अवगत कराया। साथ ही, आधुनिक विचारों जैसे - स्वशासन, लोकतंत्र नागरिक अधिकार आदि को प्रचारित कर लोगों को जागरूक बनाया। इसी क्रम में, राष्ट्रीय चेतना के विकास को बढ़ावा मिला।

(4) लिटन और कर्जन की नीतियाँ :-

- लिटन की प्रतिक्रियावादी नीतियों ने भारतीयों को असंतुष्ट किया । लिटन ने देशी समाचार पत्र अधिनियम लाकर समाचार पत्रों की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाया । साथ ही, सिविल सेवा परीक्षा में

उम्र सीमा में कमी कर भारतीयोंको इससे बाहर करने की योजना बनायी।

- इतना ही नहीं, अकाल के दौरान दिल्ली दरबार का आयोजन कर ब्रिटेन के शासक का सम्मान करने का कार्य किया और भारतीय धन का दुरुपयोग किया और लिख के भारतीय विरोधी नीति से असंतुष्ट होकर लोग एकत्रित हुए।

- **कर्जन ने विश्वविद्यालय अधिनियम लाकर शिक्षण संस्थान की स्वतंत्रताओं पर अंकुश लगाया और कलकत्ता नगर निगम अधिनियम लाकर सरकारी हस्तक्षेप को बढ़ाया।** तो साथ ही, बंगाल विभाजन की घोषणा की। इसी क्रम में, बंगाल विभाजन का विरोध बंगाल बाहर भी होने लगा।
- वस्तुतः स्वदेशी आंदोलन शुरू हुआ जो भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रसारित हुआ । इस तरह ब्रिटिश अधिकारियों की दमनकारी नीतियों से राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हुआ। इन्हीं संदर्भों में यह कहा गयो कि 'कुछ बुरे शासक भी अच्छा परिणाम पैदा करते हैं।

(5) रिपन की नीतियाँ :-

- **वायसराय रिपन के समय 1883 में 'इल्बर्ट बिलं विवाद सामने आया।** जिसने भारतीयों को एकजुट होने के लिए प्रेरित किया । वस्तुतः इल्बर्ट **बिल के तहत भारतीयों को भी यूरोपियों का मुकदमा सुनने का अधिकार दिया** गया।
- किंतु **अंग्रेजों ने संगठित होकर इस बिल का विरोध किया जिसे खेत विद्रोह के नाम से जाना जाता** हैं। अतःरिपन को यह बिल वापस लेना पड़ा। इस बिल के विवाद से स्पष्ट हुआ कि ब्रिटिश अभी भी नस्लवादी नीति पर चल रहे हैं और संगठित होकर विरोध करने से अपनी मांगो को मनवाया जा सकता हैं।

- **<u>कांग्रेस की स्थापना से पूर्व की अवस्थाएं : -</u>**

(1) सर्वप्रथम 1836 में बंग भाषा प्रकाशक सभा की स्थापना हुई।

(2) 1838 में बंगाल में "लैंड होल्डर्स सोसाइटी" की स्थापना हुई जो जमींदारों की संस्था थी।

(3) 1851 में "ब्रिटिश इंडियन एसो" की स्थापना हुई जिसके प्रथम अध्यक्ष राधा कांत देव थे जिन्होंने ब्रिटिश संसद को पत्र लिखकर अनुरोध किया कि उच्च वर्ग के अधिकारियों के वेतन में कमी की जाए तथा नमक शुल्क एवं 'जल शुल्क' में कमी की जाए।

(4) 1866 में ईस्ट इंडिया एसो० की स्थापना दादाभाई नैरोजी ने लंदन में की जिसका उद्देश्य भारत के लोगों की समस्याओं और मांगो से ब्रिटिश जनमत को परिचित कराना था। और इंग्लैंड में भारतीयों के पक्ष में जन समर्थन हासिल करना था।

(5) 1867 में पूना सार्वजनिक सभा की स्थापना रानाडे एवं गणेश वासुदेव जोशी ने की।

(6) 1875 में शिशिर कुमार घोष ने कलकत्ता में इंडिया लीग की स्थापना की।

(7) 1876 में सुरेन्द्र नाथ बनर्जी एवं आनंद मोहन बोस ने इंडियन एसो० की स्थापना की। इस संस्था को कांग्रेस की पूर्वगामी संस्था कहा जाता हैं ,सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने कहा कि यह संस्था संयुक्त भारत की अवधारणा पर आधारित हैं।

- इसकी प्रेरणा हमे मेजिनी के इटली के एकीकरण के आदर्शों से मिलती हैं। इंडियन एसो० की वार्षिक बैठक Dec. 1885 में कलकत्ता हुई जिसमें सुरेन्द्र नाथ बनर्जी शामिल थे। इसी कारण वे Dec .1885 में बॉम्बे में हो रहे कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में शामिल नहीं पाए। इंडियन एसो० के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थे :

(a) भारत में जनमत तैयार करना
(b) हिंदू-मुस्लिम जनसंपर्क बढ़ाना।
(c) सिविल सेवा का भारतीयकरण करना

- वस्तुतः इस परीक्षा के लिए उम्र सीमा में वृद्धि करना और भारत में भी परीक्षा आयोजित करना। इसके लिए ब्रिटिश सरकार के समक्ष अपना पक्ष रखने हेतु 'लाल मोहन घोष' को लंदन भेजा हैं गया ।

अध्याय – 5

1857 की क्रांति में राजस्थान का योगदान

- कर्नल जेम्स टॉड पहला व्यक्ति था जिसने राजस्थान का सर्वप्रथम सुव्यवस्थित इतिहास लिखा इसीलिए कर्नल जेम्स टॉड को राजस्थान के इतिहास का पिता कहा जाता है।
- इतिहासकार गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने कर्नल जेम्स टॉड के इतिहास लेखन की गलतियों को दूर किया इसीलिए गौरीशंकर हीराचंद ओझा को राजस्थान के इतिहास का वैज्ञानिक पिता कहा जाता है।
- घोड़े वाले बाबा उपनाम से इतिहास में प्रसिद्ध कर्नल जेम्स टॉड के गुरु ज्ञानचंद थे। कर्नल जेम्स टॉड ने पृथ्वीराज रासो के लगभग 30000 हजार दोहो, का अंग्रेजी में अनुवाद किया था।
- ब्रिटिश सरकार ने कर्नल जेम्स टॉड को 1818 से 1822 के मध्य पश्चिमी राजपूत राज्यों का पॉलिटिकल एजेंट नियुक्त किया जिसमें 6 रियासतें शामिल थी
- 1-कोटा 2- बूँदी 3-जोधपुर 4-उदयपुर 5-सिरोही 6-जैसलमेर
- 1857 के विद्रोह के संदर्भ में विभिन्न मत (Different views in reference to the revolt of 1857)
  - डॉ. रामविलास शर्मा- यह स्वतंत्रता संग्राम था।
  - डॉ. रामविलास शर्मा– यह जनक्रांति थी।
  - डिजरायली बेंजामिन डिजरैली – यह राष्ट्रीय विद्रोह था।
  - वी. डी. सावरकर- यह स्वतंत्रता की पहली लड़ाई थी (पुस्तक द इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस)।
  - एस.एन. सेन- यह विद्रोह राष्ट्रीयता के अभाव में स्वतंत्रता संग्राम था।
  - सर जॉन लॉरेंस, के. मैलेसन, ट्रैविलियन, सीले- 1857 की क्रांति एक सिपाही विद्रोह था (इस विचार से भारतीय समकालीन लेखक मुंशी जीवनलाल दुर्गादास बंदोपाध्याय सैयद अहमद खाँ भी सहमत हैं।)
  - जवाहरलाल नेहरु - यह विद्रोह मुख्यतः सामन्तशाही विद्रोह था।
  - सर जेम्स आउट्रम और डब्लयू टेलर ने इसको - यह विद्रोह हिंदू-मुस्लिम का परिणाम था कहा है।
  - क्रांति के प्रमुख कारण (Reason of 1857 Revolution)
  - देशी रियासतों के राजा मराठा व पिण्डारियों से छुटकारा पाना चाहते थे।
  - लॉर्ड डलहौजी की राज्य विलय की नीतियाँ।
  - चर्बी लगे कारतुस का प्रयोग (एनफील्ड)।
  - 1857 के विद्रोह का प्रारंभ 29 मार्च 1857 को बैरकपुर छावनी (पश्चिम बंगाल) की 34वीं नेटिव इन्फेंट्री के सिपाही मंगल पांडे के विद्रोह के साथ हुआ किन्तु संगठित क्रांति 10 मई 1857 को मेरठ (उत्तर प्रदेश) छावनी से प्रारंभ हुई थी।
  - 1857 की क्रांति का तत्कालीन कारण चर्बी वाले कारतूस माने जाते हैं, जिनका प्रयोग एनफील्ड राइफल में किया जाता था। इस रायफल के बारे में भारतीय सैनिकों में अफवाह फैली की इनमें लगने वाले कारतूसों में गाय तथा सूअर की चर्बी लगी होती है।
  - कारतूस का प्रयोग करने से पूर्व उसके खोल को मुंह से उतरना पड़ता था जिससे हिंदू तथा मुस्लिमों का धर्म भ्रष्ट होता है। परिणाम स्वरूप 1857 का विद्रोह प्रारंभ हुआ।
  - 1857 की क्रांति के समय राजपूताना उत्तरी पश्चिमी सीमांत प्रांत के प्रशासनिक नियंत्रण में था जिसका मुख्यालय आगरा में था इस प्रांत का लेफ्टिनेंट गवर्नर कोलविन था।
  - अजमेर- मेरवाड़ा का प्रशासन कर्नल डिक्सन के हाथों में था क्रांति के समय राजपुताना का ए.जी.जी जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस था जिस का मुख्यालय माउंट आबू में स्थित था अजमेर राजपूताना की प्रशासनिक राजधानी था और अजमेर में ही अंग्रेजों का खजाना और शस्त्रागार स्थित था।
  - अजमेर की रक्षा की जिम्मेदारी 15वीं नेटिव इन्फैंट्री बटालियन के स्थान पर ब्यावर से बुलाई गई, लेफ्टिनेंट कारनेल के नेतृत्व वाली रेजिमेंट को दे दी गई मेरठ विद्रोह की खबर 19 मई 1857 को माउंट आबू पहुंची।

    इस क्रांति का प्रतीक चिह्न रोटी और कमल का फूल था

- PA मेजर बर्टन की हत्या में कोटा महाराव की भूमिका की जाँच के लिए एक आयोग बनाया गया जिसने महाराव को दोषी ठहराया।
- AGG जॉर्ज पैट्रिक लॉरेन्स ने महाराव पर 15 लाख रुपये के जुर्माने की सिफारिश की।
- लेकिन ब्रिटिश सरकार ने महाराव रामसिंह II को दोषमुक्त कर दिया। महाराव ने भी क्षमा याचना कर ली।
- रामसिंह II के सम्मान में कमी करते हुए उनकी सलामी में दी जाने तोपों की संख्या घटाकर 11 कर दी गई ।
- करौली के मदनपाल के सम्मान में वृद्धि करते हुये सलामी में दी जाने वाली तोपों की संख्या बढ़ाकर 15 कर दी।

देवली छावनी

- यह छावनी टोंक जिले में स्थित है।
- राजस्थान में 1857 की क्रांति के समय टोंक का नवाब "वजीरुद्दौला " था जो अंग्रेज समर्थक था।
- इस छावनी में विद्रोह नहीं हुआ यहाँ पर नीमच छावनी के सैनिक अवश्य पहुँचे थे।
- देवली में किसी अंग्रेज को हानि नहीं पहुँची क्योंकि उन्हें पहले ही छावनी से हटाकर "जहाजपुर कस्बे" में बसा दिया गया था।
- राजस्थान में 1857 की क्रांति और तांत्या टोपे
- ग्वालियर में असफलता के बाद तांत्या टोपे राजपूताना में आ गये।
- तांत्या सर्वप्रथम मांडलगढ़ पहुँचे।
- वह लालसोट होते हुए टोंक भी पहुँचे थे। टोंक की सेना ने तांत्या टोपे का समर्थन किया था। 'हम्मीरगढ़ के युद्ध" में तांत्या टोपे ने टोंक के नवाब " वजीरुद्दौला " को पराजित कर दिया।
- ब्रिग्रेडियर होम्स द्वारा पीछा किये जाने पर तांत्या सलूम्बर के रावत जोधसिंह के पास चले गये।
- तांत्या टोपे ने झालावाड़ पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया। अंग्रेज भक्त पृथ्वीसिंह झालावाड़ का शासक था।
- अंग्रेजों से पराजित होने पर तांत्या टोपे सितंबर 1858 में राजपुताना से बाहर चले गए।
- दिसंबर 1858 में वह पुनः राजपूताना में प्रवेश कर गये तथा बाँसवाड़ा पर अधिकार कर लिया।
- बाँसवाडा का शासक अंग्रेज समर्थक लक्ष्मण सिंह था।
- कालान्तर में वह दौंसा होते हुये सीकर चले गये।
- सीकर में नरवर के जागीरदार मानसिंह नरूका ने धोखे से तांत्या टोपे को अंग्रेजों के हाथों पकड़वा दिया।
- टोपे सर्वप्रथम 8 अगस्त 1857 को भीलवाड़ा आये । वहाँ 9 अगस्त को उनका कोठारी नदी के तट पर जनरल राबर्ट्स तथा तांत्या टोपे के बीच " कुआड़ा का युद्ध " (भीलवाड़ा) लड़ा गया।

राजस्थान में 1857 की क्रांति से संबन्धित महत्वपूर्ण तथ्य

धौलपुर

- यहाँ पर क्रांति का नेतृत्व रामचन्द्र तथा हीरालाल द्वारा किया गया।
- इंदौर तथा ग्वालियर से आये सैनिकों ने यहाँ विद्रोह किया था।
- 1857 की क्रांति के समय धौलपुर का शासक भगवन्त सिंह था।
- पटियाला से आई सेना ने धौलपुर को विद्रोहियों से मुक्त करवाया।

जयपुर

- राजस्थान में 1857 की क्रांति के समय जयपुर का शासक रामसिंह II था । इसने 1857 के विद्रोह के दमन में अंग्रेजों की सहायता की थी।
- इसकी सेवा से प्रसन्न ब्रिटिश सरकार ने इसे " सितार-ए-हिन्द " का ख़िताब दिया।
- ईनाम के रूप में " कोटपूतली का परगना " इसे भेंट किया गया।

बीकानेर

- 1857 की क्रांति के समय यहाँ का शासक सरदार सिंह था।
- यह अंग्रेजों की सहायता के लिये अपनी सेना लेकर पंजाब तथा हरियाणा गया था।
- अंग्रेजों ने इसकी सेवा से प्रसन्न होकर इसे 41 गाँव भेंट में दिये।
- 1857 के विद्रोह के दमन में अंग्रेजों की सहायता के लिए राजपुताना से बाहर जाने वाला शासक सरदार सिंह ही था।

साथ ही सूरजमल भी मारा गया। फिर रतनसिंह का छोटा भाई विक्रमादित्य 1531 ई. में मेवाड़ का राजा बना। उस समय विक्रमादित्य छोटी उम्र में था। अतः राज कार्य का संचालन उनकी माता हाड़ा रानी कर्मवती करती थीं । उस समय गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह ने सन् 1533 ई. मे चित्तौड़ पर आक्रमण किया।

- रानी कर्मवती ने बादशाह हुमायूँ से सहायता मिलने की आशा पर अपना एक दूत हुमायूँ के पास भेजा लेकिन हुमायूँ ने सहायता नहीं की। अंततः कर्मवती ने सुल्तान से संधि कर ली। 24 मार्च, 1533 ई. को सुल्तान चित्तौड़ से लौट गया परन्तु 1534 ई. में सुल्तान ने फिर आक्रमण किया। महाराणा विक्रमादित्य को उदयसिंह सहित बूँदी भेज दिया गया और युद्ध तक देवलिये के रावत बाघसिंह को महाराणा का प्रतिनिधि बनाया गया। वीर रावत बाघसिंह चित्तौड़ दुर्ग के पाड़नपोल दरवाजे के बाहर तथा राणा सज्जा व सिंहा हनुमान पोल के बाहर लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।
- लड़ाई में सेनापति **रूमी खाँ** के नेतृत्व में बहादुर शाह की सेना विजयी हुई और हाडी रानी कर्मवती ने जौहर किया। यह चित्तौड़ का दूसरा साका कहलाता है। लेकिन बादशाह हुमायूँ ने तुरंत ही बहादुरशाह पर हमला कर दिया। जिससे सुल्तान कुछ साथियों के साथ माण्डू भाग गया। बहादुर शाह के हारने पर मेवाड़ के सरदारों ने पुनः चित्तौड़ के किले पर अधिकार कर लिया। फिर विक्रमादित्य पुनः वहाँ के शासक हो गए।
- बनवीर ने उदयसिंह का वध करना चाहा लेकिन स्वामीभक्त पन्नाधाय ने अपने पुत्र चंदन का बलिदान देकर उदय सिंह को बचा लिया। मेवाड़ का स्वामी बनकर बनवीर राज्य करने लगा। उदयसिंह द्वितीय को लेकर पन्नाधाय कुंभलनेर पहुंची। वहां के किलेदार **आशा देवपुरा** ने उन्हें अपने पास रख लिया।

महाराणा उदयसिंह (1537-1572 ई.)

- 1537 में कुछ सरदारों ने उदयसिंह को मेवाड़ का स्वामी मानकर कुम्भलगढ़ में राज्याभिषेक कर दिया। उदयसिंह ने सेना एकत्रित कर कुंभलगढ़ से ही चित्तौड़ पर चढ़ाई की। बनवीर मारा गया। 1540 ई. में उदयसिंह अपने पैतृक राज्य का स्वामी बना। 1559 ई. में महाराणा उदयसिंह ने उदयपुर की नींव डाली।
- मुग़ल बादशाह अकबर ने 23 अक्टूबर, 1567 को चित्तौड़ किले पर आक्रमण किया। महाराणा उदयसिंह ने मालवा के पदच्युत शासक राज बहादुर को अपने यहाँ शरण देकर अकबर के लिए चित्तौड़ पर आक्रमण करने का अवसर प्रदान कर दिया। महाराणा उदयसिंह राठौड़ जयमल और रावत पत्ता को सेनाध्यक्ष नियुक्त कर कुछ सरदारों के साथ मेवाड़ के पहाड़ों में चले गए। अकबर से युद्ध में **जयमल और कल्ला राठौड़** हनुमान पोल व भैरव पोल के बीच और पत्ता रामपोल के भीतर वीरगति को प्राप्त हुए।
- राजपूत स्त्रियों ने जौहर किया। **25 फरवरी, 1568** को अकबर ने किले पर अधिकार कर लिया। यह चित्तौड़ दुर्ग का **तीसरा साका** था। **जयमल और पत्ता** की वीरता पर प्रसन्न होकर अकबर ने आगरा जाने पर हाथियों पर चढ़ी हुई, उनकी पाषाण की मूर्तियां बनवाकर किले के द्वार पर खड़ी करवाई **महाराणा उदयसिंह** का 28 फरवरी, 1572 ई. को गोगुन्दा में होली के दिन देहांत हो गया। जहां उनकी छतरी बनी हुई है।

महाराणा प्रताप सिंह (1572-1597 ईस्वी.)

जन्म - 9 मई, 1540

अन्य नाम प्रताप का कीका

जन्म स्थान - कुम्भलगढ़ दुर्ग

पिता – राणा उदय सिंह

माता - महाराणी जयवंता बाई

विवाह - उन्होंने 11 शादियाँ की थी - महारानी अजब्धे पंवार, अमरबाई राठौड़, शहमति बाई हाडा, लखाबाई, जसोबाई चौहान और 6 पत्नियाँ

संतान - अमर सिंह, भगवान दास और 17 पुत्र

प्रारम्भिक जीवन और बचपन

- प्रताप का जन्म भारतीय तिथि के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल की तृतीय को हुआ था, इस कारण आज भी प्रतिवर्ष इस दिन महाराणा प्रताप का जन्म दिवस मनाया जाता है ।
- राणा उदय सिंह द्वितीय के 33 पुत्र थे, जिनमें प्रताप सिंह सबसे बड़े पुत्र थे, प्रताप बचपन से ही स्वाभिमानी और देशभक्त थे, साथ ही वो बहादुर

और संवेदनशील भी थे। उन्हें खेलों और हथियार के प्रशिक्षण में रुचि थी। वास्तव में प्रताप को मेवाड़ के प्रति अपनी जिम्मेदारी की समझ बहुत जल्द आ गयी थी, इस कारण बहुत कम उम्र में ही उन्होंने हथियार, घुड़सवारी, युद्ध का प्रशिक्षण लेना शुरू कर दिया। वो सभी राजकुमारों में सबसे ज्यादा प्रतिभावान और बलशाली राजकुमार थे। महाराणा प्रताप जयमल मेडतिया के शिष्य थे, जो बहुत वीर था, जब **बहलोल खान** ने जयमल को युद्ध के लिए ललकारा तो उन्होंने खान के घोड़े के साथ उसके दो टुकड़े कर दिए।

- 1567 में चित्तौड़ को अकबर की मुग़ल सेना ने चित्तौड़ को सब तरफ से घेर लिया था, ऐसे में मुगलों के हाथों में पड़ने की जगह महाराणा उदयसिंह ने अपने परिवार के साथ गोगुन्दा जाने का निश्चय किया, हालांकि उस समय भी राजकुमार प्रताप वहीं रहकर युद्ध करना चाहते थे लेकिन प्रतिकूल परिस्थितियां होने के कारण उन्हें अपने परिवार के साथ गोगुन्दा जाना पड़ा। उदयसिंह और उनके मंत्रियों ने गोगुन्दा में ही अस्थायी शासन शुरू किया।

कुंवर प्रताप से महाराणा प्रताप

- उदयसिंह ने मरने से पहले अपनी सबसे छोटी रानी के **पुत्र जगमाल** को राजा नियुक्त किया और प्रताप ने सबसे बड़ा और योग्य पुत्र होते हुए भी ये स्वीकार कर लिया, लेकिन मंत्री इस बात से सहमत नहीं हुए क्योंकि जगमाल में राजा बनने के गुण नहीं थे। **1572 में उदयसिंह** की मृत्यु हो गयी। इसलिए सबने मिलकर ये निर्णय लिया कि सत्ता महाराणा प्रताप को दी जायेगी, महाराणा प्रताप सिंह ने भी उनकी इच्छा का सम्मान करते हुए, **1 मार्च 1572** को गद्दी संभाल ली, इस कारण जगमाल को क्रोध आ गया और वो अकबर की सेना में शामिल होने के लिए अजमेर के लिए रवाना हो गया और अकबर की मदद के बदले जहाजपुर की जागीर हासिल करना ही उसकी मंशा थी।

महाराणा प्रताप और अकबर

- महाराणा प्रताप के समय अकबर दिल्ली का शासक था, उसकी रणनीति थी कि वो हिन्दू राजाओं की शक्ति को अपने अधीन करके उन पर शासन करता था। इसी क्रम में युद्ध को नजरअंदाज करते हुए बहुत से राजपूतों ने युद्ध की जगह अपनी बेटियों के डोली अकबर के हरम में भेज दी, जिससे कि संधि हो सके, लेकिन मेवाड़ ऐसा राज्य नहीं था, यहाँ अकबर को काफी संघर्ष करना पड़ा। उदयसिंह के समय राजपूतों ने जब चित्तौड़ छोड़ दिया था तो मुगलों ने शहर पर कब्जा कर लिया हालांकि वो पूरे मेवाड़ को हासिल करने में नाकाम रहे, और अकबर पूरे हिन्दुस्तान पर शासन करना चाहता था इसलिए पूरा मेवाड़ उसका लक्ष्य था। केवल 1573 में ही अकबर ने 6 बार संधि वार्ता प्रस्ताव भेजे लेकिन प्रताप ने सबको अस्वीकार कर दिया, अकबर के पांच बार संधि वार्ता भेजने के बाद प्रताप ने अपने बेटे अमरसिंह को अकबर के दरबार में संधि अस्वीकार करने के लिए भेजा, इसके बाद सबसे अंतिम प्रस्ताव अकबर के बहनोई मानसिंह लेकर आये थे और अंतिम बार भी संधि प्रस्ताव के लिए मना कर दिया

हल्दीघाटी का युद्ध

- 1576 में अकबर ने राजपूत सेनापति मानसिंह प्रथम और आसफ खान को प्रताप पर आक्रमण करने के लिए भेजा, जबकि प्रताप ने ग्वालियर के राम शाह तंवर और उनके तीन पुत्र रावत कृष्णादासजी चुडावत, मानसिंह झाला और चन्द्रसेन जी राठौड़ और अफगान से **हाकिम खान सुर** के अलावा भील समुदाय के मुखिया **राव पूंजा** की मदद से एक छोटी सी सेना गठित की। मुग़ल सेना में जहाँ 80,000 सैनिक थे, वहीं राजपूत सेना मात्र 20,000 सैनिकों की थी। इस तरह उदयपुर से 40 किलोमीटर दूर हल्दीघाटी में युद्ध सम्मुख युद्ध शुरू हुआ। यह युद्ध **18 जून 1576** को 4 घंटे के लिए हुआ, मुग़ल सेना को प्रताप के भाई शक्ति सिंह ने गुप्त मार्ग बता दिया, जिससे मुगलों को आक्रमण की दिशा मिल गयी। मुग़ल सेना के घुड़सवारों का नेतृत्व **मानसिंह प्रथम** कर रहे थे, प्रताप ने मानसिंह का सामना खुद करने का नहीं मानने से अकबर बेहद क्रोधित हुआ और उसने मेवाड़ पर हमला कर दिया।
- वैसे कहा जाता है कि अकबर ने राणा प्रताप से ये तक कहा था कि वो यदि अकबर से संधि कर ले तो अकबर प्रताप को आधा हिन्दुस्तान दे देगा लेकिन महाराणा प्रताप ने किसी की भी अधीनता स्वीकार करने से निश्चय किया और अपना घोड़ा

उनके सामने ले गए लेकिन चेतक और प्रताप दोनों मानसिंह के हाथी से घायल हो गए। इसके बाद मानसिंह झाला ने अपना कवच प्रताप से बदल लिया था जिससे कि मुग़ल सेना में भ्रम पैदा हो सके, और राणा प्रताप बचकर निकल सके। हल्दीघाटी के युद्ध के बाद अरावली के कुछ हिस्सों को छोडकर पुरा मेवाड़ मुगलों के हाथ में चला गया ।

- जुलाई 1576 में प्रताप ने गोगुन्दा को मुगलों से वापिस कब्जे में ले लिया और कुम्भलगढ़ को अपनी अस्थायी राजधानी बनाया, लेकिन अकबर ने खुद प्रताप पर चढ़ाई कर दी और गोगुन्दा, उदयपुर एवं कुम्भलगढ़ पर कब्जा कर लिया जिससे महाराणा वापिस पहाड़ों में लौटने को मजबूर हो गये।
- अगले कुछ वर्षों में कुम्भलगढ़ एवं चित्तौड़ ने अपनी खोयी हुई, सम्पति को वापिस कब्जे में ले लिया और साथ ही गोगुन्दा, रणथम्भौर और उदयपुर को भी छीन लिया। जब महाराणा प्रताप ने अकबर के सामने झुकने से मना कर दिया तब अकबर ने युद्ध की घोषणा कर दी। महाराणा ने अपनी राजधानी चित्तौड़ से हटाकर अरावली की पहाड़ियों में **कुम्भलगढ़** ले गए, जहां उन्होंने आदिवासियों और जनजातियों को सेना में शामिल करना शुरू किया। इन लोगों को युद्ध का कोई अनुभव नहीं था, महाराणा ने उन्हें प्रशिक्षण दिया, इस तरह उन्होंने समाज के दो वर्गों को एक उद्देश्य के लिए एक दिशा में लाने का प्रयास किया। 1579 के बाद अकबर की बंगाल, बिहार और पंजाब पर ध्यान होने के कारण मेवाड़ पर पकड़ ढीली होने लगी, इस परिस्थिति का फायदा उठाकर प्रताप ने दान **शिरोमणि भामाशाह** के दान किये धन से कुम्भलगढ़ और चित्तौड़ के आस-पास के क्षेत्र पर वापिस कब्जा कर लिया, उन्होंने **40,000** की सेना एकत्र करके गोगुन्दा, कुम्भलगढ़, रणथम्भौर और उदयपुर को भी मुगलों से मुक्त करवा लिया। 6 महीने बाद अकबर ने फिर से हमला किया लेकिन फिर से उसे मुंह की खानी पड़ी और आखिर में अकबर ने 1584 में जगन्नाथ को बड़ी सेना के साथ मेवाड़ भेजा लेकिन 2 वर्ष के संघर्ष के बाद भी वह राणा प्रताप को नहीं पकड़ सका।
- इस तरह हल्दीघाटी का युद्ध हो या इसके पश्चात् के छोटे-बड़े सम्मुख/गरिल्ला युद्ध दोनों पक्षों ने कभी हार नहीं स्वीकार की, और इन सब में राष्ट्र के लिए जो आज भी गौरव का विषय है वो राणा प्रताप का निरंतर संघर्ष और मेवाड़ को मुक्त करवाने की जिजीविषा है, जो उनकी मृत्यु तक उनके साथ थी।

दिवेर का युद्ध (अक्टूबर, 1582)

- महाराणा प्रताप ने मेवाड़ की भूमि को मुक्त कराने का अभियान दिवेर से प्रारंभ किया। दिवेर वर्तमान राजसमंद जिले में उदयपुर-अजमेर मार्ग पर स्थित है। दिवेर के शाही थाने का मुख्तार सम्राट अकबर का काका सुल्तान खान था। महाराणा प्रताप ने उस पर अक्टूबर 1582 में आक्रमण किया। मेवाड़ और मुग़ल सैनिकों के मध्य निर्णायक युद्ध हुआ। महाराणा सम्राट को यश और विजय प्राप्त हुई, दिवेर की जीत की ख्याति चारों ओर फैल गई।
- प्रताप के जीवन के बहुत बड़े विजय अभियान का यह शुभ और कीर्तिदायी शुभारम्भ था। दिवेर की जीत के बाद महाराणा प्रताप ने चावंड में अपना निवास स्थान बनाया। अकबर ने अब पुनः मेवाड़ की ओर ध्यान देना प्रारंभ किया। प्रताप अब भी परास्त नहीं हुआ है, यह भारत विजेता सम्राट कैसे सहन कर सकता है। अतः अकबर ने आमेर के राजा भारमल के छोटे पुत्र जगन्नाथ कछवाहा के नेतृत्व मे 5 दिसंबर 1584 को एक विशाल सेना मेवाड़ के विरुद्ध रवाना की लेकिन जगन्नाथ को भी कोई सफलता नहीं मिली। वह भी प्रताप को नहीं पकड़ सका। यह अकबर का प्रताप के विरुद्ध अंतिम अभियान था।
- अब अकबर मेवाड़ मामले में इतना निराश हो चुका था कि छुटपुट कारवाई उसे निरर्थक लगी और बड़े अभियान के लिए वह अवकाश नहीं निकाल सका। 1586 से 1596 तक दस वर्ष की सुदीर्घ अवधि मे प्रताप को जहाँ का तहाँ छोड़ दिया गया। इसे अघोषित संधि कहा जा सकता है अथवा अपनी विवशता की अकबर द्वारा परोक्ष स्वीकृति, प्रताप ने 1585 में अपने स्थायी जीवन का आरम्भ चावंड मे मेवाड़ की नई राजधानी स्थापित करके किया।
- प्रताप के अंतिम बारह वर्ष और उनके उत्तराधिकारी महाराणा अमरसिंह के राजकाज के प्रारंभिक 16 वर्ष चावंड मे बीते। चावंड 28 साल मेवाड़ की राजधानी रहा। चावंड गांव से लगभग आधा मील दूर एक पहाड़ी पर प्रताप ने अपने महल बनवाए। 19 जनवरी 1597 को प्रताप का चावंड मे देहांत हुआ। चावंड से

कुछ दूर बांडोली गांव के निकट महाराणा का अंतिम संस्कार हुआ। जहां उनकी छतरी बनी हुई है।

महाराणा प्रताप और चेतक

- प्रताप के विश्वसनीय घोड़े का नाम चेतक था, जो कि ।। फीट लम्बा था। चेतक पर नीले रंग का निशान था इसलिए राणा प्रताप को "नीले घोड़े रा असवार कहा जाता है, जिसका मतलब **"नीले घोड़ी की सवारी करने वाला"** होता है ।
- हल्दीघाटी के युद्ध में मानसिंह के साथ युद्ध करते हुए महाराणा प्रताप और उनका घोड़ा घायल हो गया था, फिर भी **26 फीट चौड़ी** नदी पार करने में उसने अपने स्वामी का सहयोग किया था, लेकिन इसके बाद वो ज्यादा जीवित नहीं रह सका। चेतक ने अपनी जान देकर भी अपने स्वामी की जान बचाई थी, महाराणा चेतक की मृत्यु पर बालक की तरह रोये थे। चेतक की मृत्यु के बाद ही **शक्ति सिंह** को अपनी गलती का एहसास हुआ था और उसने **अपना** घोड़ा प्रताप को दे दिया।
- प्रताप चेतक को नहीं भूल सके, और बाद में उन्होंने उस जगह पर एक उद्यान बनवाया, जहां पर चेतक ने अंतिम सांस ली थी।

अमरसिंह प्रथम (1597-1620 ईस्वी)

- राणा अमरसिंह मेवाड़ राजस्थान के **सिसोदिया राजवंश** के शासक थे। इनके पिता महाराणा प्रताप थे तथा महाराणा उदयसिंह इनके दादा थे । राणा अमरसिंह भी महाराणा प्रताप जैसे वीर थे और इन्होंने मुग़लों से **18 बार** युद्ध लड़ा । जहांगीर ने मेवाड़ में प्रजा को मारना शुरु कर दिया था और बहुत सारे लोगों को बंदी भी बना दिया इस कारण राणा अमरसिंह को अपने अंतिम समय में जहांगीर से संधि करनी पड़ी थी । राणा अमरसिंह प्रजा भक्त थे । इनको गुलामी में रहना अच्छा नहीं लगा फिर इन्होंने अपना राज्य अपने पुत्र को देकर ख़ुद एक कुटिया में रहने लग गए ।
- अमरसिंह प्रथम महाराणा प्रताप के पुत्र थे, जिनका राज्याभिषेक चावंड में हुआ ।
- अमरसिंह प्रथम के पुत्र कर्णसिंह व सिसोदिया सरदारों के कहने पर अमरसिंह ने **5 फरवरी, 1615 ई.** में मुगलों के साथ संधि की तथा निम्न शर्ते रखी ।
- मुग़ल-मेवाड़ वैवाहिक सम्बन्ध स्वीकार नहीं, मेवाड़ महाराणा मुग़ल दरबार में उपस्थित नहीं होगा।
- शाही सेना में महाराणा 1000 सवार रखेगा, महाराणा का ज्येष्ठ कुंवर शाही दरबार में उपस्थित होगा आदि।
- अमरसिंह प्रथम का देहांत 26 जनवरी, 1620 को हुआ तथा इनकी छतरी आहड़ (उदयपुर) में बनी हुई है।
- अमरसिंह मेवाड़ का पहला महाराणा था, जिसने मुगलों के साथ संधि की तथा जहाँगीर ने एकमात्र मेवाड़ राज्य के शासक को मुग़ल दरबार में उपस्थित होने की छूट दी।
- इस संधि के बारे में कथन कर्नल टॉड ने कहा कि - 'बादशाह ने मेवाड़ के राणा को आपस के समझौते से अधीन किया था, न कि बल से।'

कर्णसिंह (1620-1628)

- ये मेवाड़ के पहले शासक थे, जिन्हें मुग़ल दरबार में 1000 की मनसबदारी दी गई, महाराणा कर्णसिंह ने जगमंदिर महलों को बनवाना शुरू किया। जिसे उनके पुत्र महाराणा जगतसिंह ने पूर्ण किया। इसलिए यह महल **जगमंदिर एवं जगनिवास** कहलाते हैं।
- **पिछोला झील** के किनारे जगमंदिर महल निर्माण कार्य कर्णसिंह ने प्रारम्भ किया था तथा इसको जगतसिंह प्रथम ने पूर्ण करवाया था।
- कर्णसिंह ने 1623-24 ई. में शाहजहाँ (शहज़ादा खुर्रम) को पिछोला झील के जगमंदिर महल में शरण दी।
- इसी जगमंदिर महल को देखकर शाहजहाँ ने **मुमताज** की याद में ताजमहल बनवाया।
- कर्णसिंह ने कर्णविलास तथा दिलखुश महलों का निर्माण करवाया था।

जगतसिंह प्रथम (1628-1652 ईस्वी)

- कर्णसिंह के बाद उसका पुत्र जगतसिंह प्रथम महाराणा बना। उसका राज्याभिषेक 28 अप्रैल, 1628 को हुआ। 1652 ई. में उदयपुर में जगन्नाथ राय (जगदीश जी) का भव्य मंदिर बनवाया। मंदिर की विशाल प्रशस्ति की (जगन्नाथ राय प्रशस्ति) रचना कृष्णभट्ट ने की। 10 अप्रैल, 1652 ई. को उदयपुर में जगतसिंह प्रथम की मृत्यु हो गई ।
- जगतसिंह प्रथम ने पिछोला झील के किनारे बने जगमंदिर महल का निर्माण कार्य पूर्ण करवाया।

कला संस्कृति

अध्याय - I

स्थापत्य कला की प्रमुख विशेषताएं

- **मंदिर**

भारत में मंदिर निर्माण का प्रारंभिक व प्रायोगिक काल गुप्तकाल के प्रारंभ से सातवीं शताब्दी तक का काल माना जाता है।
राजस्थान में मंदिर निर्माण की शैलियां-

(I.) नागर या आर्य शैली-

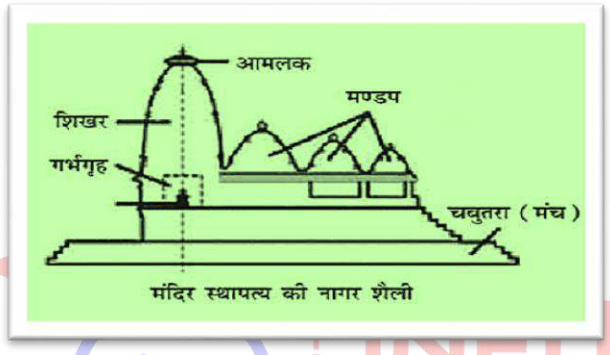

मंदिर स्थापत्य की नागर शैली

- उत्तरी भारत की शैली जिसमें मंदिर ऊँचे चबूतरे पर बना होता है।
- मंदिर का शिखर आमलक और कलश में विभेदित होता है।
- मंदिर में मूर्ति वाला स्थान गर्भगृह वर्गाकार होता है।
- पर्सी ब्राउन ने नागर शैली को उत्तर भारतीय आर्य शैली कहा ।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न है- किराडू का सोमेश्वर मंदिर (बाड़मेर), जगत अम्बिका मंदिर (उदयपुर),दधिमति माता मंदिर (नागौर),ओसिया के मंदिर (जोधपुर)।

(2.) भूमिज शैली

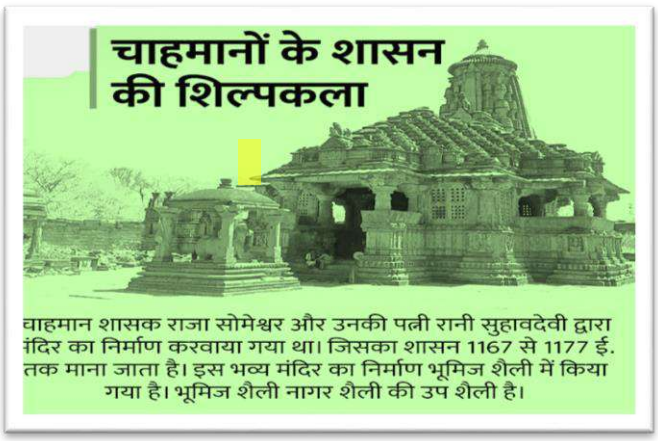

चाहमान शासक राजा सोमेश्वर और उनकी पत्नी रानी सुहावदेवी द्वारा मंदिर का निर्माण करवाया गया था। जिसका शासन 1167 से 1177 ई. तक माना जाता है। इस भव्य मंदिर का निर्माण भूमिज शैली में किया गया है। भूमिज शैली नागर शैली की उप शैली है।

- यह नागर शैली के अंतर्गत आती है।
- इसमें प्रदक्षिणा पथ खुला होता है।
- भूमिज शैली का सबसे प्राचीन मंदिर पाली में स्थित सेवाड़ी जैन मंदिर है।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न है- उंडेश्वर मंदिर (बिजौलिया) 1025 ई., महानालेश्वर मंदिर (मैनाल, भीलवाड़ा) 1075 ई., अद्भुत नाथ जी का मंदिर (चितौड़गढ़)।

(3.) द्रविड़ शैली

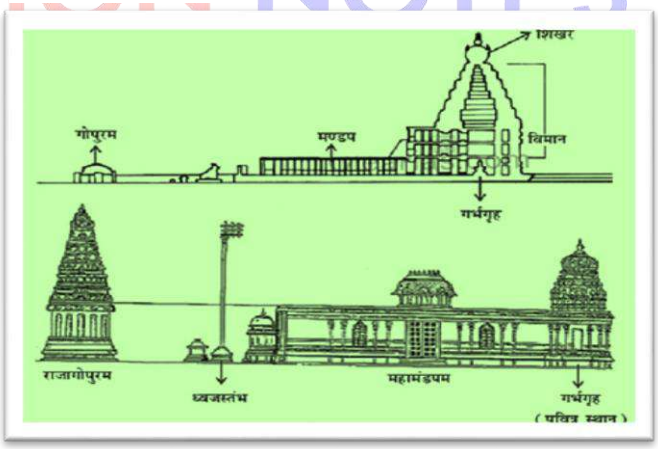

- दक्षिणी भारत की शैली।
- इस शैली में देव मूर्ति वाले गर्भ गृह के ऊपर ऊँचे विमान या पिरामिड बने होते हैं। जो अलंकृत होते हैं।
- इनमें बनाया गया गर्भगृह आयताकार होता है।
- मंदिर का मुख्य द्वार गोपुरम कहलाता है।
- द्रविड़ शैली का राजस्थान में सबसे प्राचीन मंदिर धौलपुर में स्थित चौपड़ा मंदिर है।

- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न हैं- रंग नाथ (पुष्कर, अजमेर), महादेव मन्दिर (झालावाड़)।

(4.) पंचायन शैली

- इसमें मुख्य मंदिर विष्णु को समर्पित होता है।
- इसके अलावा चार अन्य देव मंदिर सूर्य, शक्ति ,शिव व गणेश के होते हैं।
- ये मंदिर मुख्य मंदिर के चारों कोनों पर होते है तथा पाँचों का परिक्रमा पथ एक ही होता है।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न हैं- ओसियां के हरिहर मंदिर (जोधपुर), बूढादीत सूर्य मंदिर (कोटा), भंवाल माता (नागौर), जगदीश मंदिर (उदयपुर)।

❖ राजस्थान के प्रमुख मंदिर

मौर्यकालीन मंदिर (300 ई.पू.)	नगरी (चित्तौड़गढ़) नांद (पुष्कर, अजमेर) बैराठ (जयपुर)
गुप्त कालीन मंदिर (300 से 700 ई.)	चार चौमा शिवालय (कोटा), कन्सुआ (कोटा)
गुर्जर प्रतिहार या महामारू शैली (700 ई. से 1000 ई.)	ओसिया के मंदिर (जोधपुर) जगत अम्बिका मंदिर (उदयपुर) , कुभ श्याम मंदिर (चितौड़), कालिका माता मंदिर (चितौड़गढ़) किराडू का सोमेश्वर मंदिर (बाड़मेर), दधिमति माता मंदिर (नागौर) हर्षद माता (आभानेरी,दौसा), हर्षनाथ मंदिर (सीकर), आउवा कामेश्वर मंदिर (पाली)
सोलंकी मंदिर (चालुक्य) / महागुर्जर शैली (11 वीं से 13 शताब्दी)	दिलवाड़ा के जैन मंदिर (सिरोही) समाद्धिश्वर मंदिर (मोकल मंदिर) सच्चिया माता मंदिर (ओसिया,जोधपुर)

I. राजस्थान के निम्नलिखित मंदिरों में से गुर्जर - प्रतिहार काल में निर्मित मंदिरों को चुनिए [RAS. 2016]
(1)आहड़ का आदिवराह मंदिर (2)आभानेरी का हर्षमाता का मंदिर
(3) राजोरगढ़ का नीलकंठ मंदिर (4) ओसियाँ का हरिहर मंदिर
कूट :
(a)1 , 2 , 3 और 4 (b)1 , 2 और 4
(c) 1 और 4 **(d)2 और 4**

❖ सोमेश्वर मंदिर किराडू (बाड़मेर)

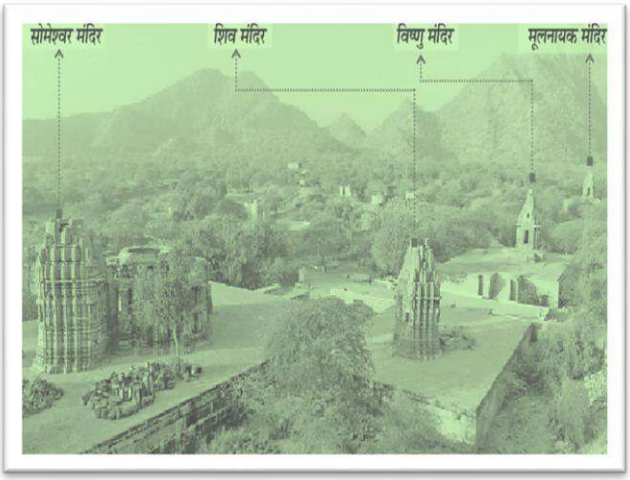

- यह मन्दिर हाथमा गाँव, किराडू (बाड़मेर) में स्थित है।
- किराडू का पुराना नाम किरात कूप है जो परमार राजाओं की राजधानी थी।
- इस मंदिर की मूर्तिकला को देखकर इसे 'मूर्तियों का खजाना' कहा जाता है।

- इन मन्दिरों में कुल पाँच मन्दिर हैं जिसमें चार भगवान शिव के तथा एक भगवान विष्णु का है।
- इन मन्दिरों का मूल निर्माण की शैली नागर या आर्य शैली है।
- किराडू के मंदिरों को राजस्थान का खजुराहों कहते है। ।।78 ई. में मुहम्मद गौरी ने इस मंदिर पर आक्रमण किया था। इस मंदिर के सामने पहाड़ी पर महिषासुर मर्दिनी की एक त्रिपाद मूर्ति है।

❖ शीतलेश्वर महादेव का मंदिर (झालावाड़)

- यह झालरापाटन, झालावाड़ में स्थित है।
- यह मंदिर महामारू शैली में बना है।
- यह राजस्थान का प्रथम तिथियुक्त (689 ई.) मंदिर है।
- इसका निर्माण दुर्गाण के सामन्त वाप्पक ने करवाया।
- यह मन्दिर चन्द्रभागा नदी के किनारे स्थित है
- झालरापाटन 'घंटी वाले मंदिरों का शहर ' कहलाता है।
- इसे चन्द्रमौलिश्वर महादेव मन्दिर कहा है।
- यहाँ अर्द्धनारीश्वर की मूर्ति स्थापित है।

❖ ब्रह्मा जी का मंदिर (पुष्कर, अजमेर)

- यह पुष्कर, अजमेर में स्थित विश्व का प्रथम ब्रह्मा मन्दिर है।
- इस मन्दिर का निर्माण गोकलचंद पारीक ने करवाया था लेकिन कुछ किंवदंतियों के अनुसार इस मंदिर का प्रारम्भिक निर्माण शंकराचार्य ने करवाया था।
- इस मंदिर को राष्ट्रीय महत्व का स्मारक घोषित किया गया है।
- इस मन्दिर के परिसर में पंचमुखी महादेव, लक्ष्मीनारायण, गौरीशंकर, पातालेश्वर महादेव, नारद और नवग्रह के छोटे - छोटे मन्दिर बने हुए हैं।
- NOTE- राजस्थान में स्थित अन्य प्रमुख ब्रह्मा मंदिर छीछ गाँव (बाँसवाड़ा) में तथा आसोतरा बाड़मेर में स्थित है।

ब्रह्मा मन्दिर (छींछ,बाँसवाड़ा) - इस मन्दिर का निर्माण ने 12वीं सदी में जगमाल सिसोदिया करवाया। यहाँ नवग्रहों का मन्दिर तथा ब्रह्म घाट स्थित है।

ब्रह्मा मंदिर (आसोतरा,बाड़मेर) - इसका निर्माण संत खेतरामजी महाराज ने करवाया।

❖ सावित्री मन्दिर (पुष्कर, अजमेर)

- सावित्री मंदिर का निर्माण रत्नागिरि पर्वत पुष्कर, अजमेर में गोकुलचंद पारीक ने करवाया था।
- सावित्री जी का मेला भाद्रपद शुक्ल सप्तमी को भरता है।
- यहाँ मई, 2016 में राजस्थान का तीसरा रोप वे बनाया गया था।
- कुछ जन अनुश्रुतियों के अनुसार यज्ञ के समय सावित्री माता अपने पति ब्रह्मा से रुठकर यहाँ चली आयी थीं। यहीं सावित्री माता ने ब्रह्माजी को श्राप दिया था कि उनकी पूजा पुष्कर के अतिरिक्त कहीं नहीं होगी।

❖ एकलिंगनाथजी के मंदिर (कैलाशपुरी, उदयपुर)

- इस मन्दिर का निर्माण 734 ई. में बप्पा रावल (कालभोज) ने करवाया।
- राणा मोकल ने इसका जीर्णोद्धार करवाया था।
- इस मन्दिर में एकलिंगजी की चतुर्मखी काले पत्थर की मूर्ति है।
- इसमें उत्तर मुख को ब्रह्मा, दक्षिण मुख को शिव, पूर्व मुख को सूर्य, पश्चिम मुख को विष्णु कहा जाता है।
- यह मन्दिर लकुलीश मन्दिर कहलाता है। राजस्थान में पाशुपत सम्प्रदाय (लकुलीश सम्प्रदाय) का यह एकमात्र मन्दिर है।
- एकलिंगजी को मेवाड़ शासक अपना वास्तविक राजा मानते हैं।
- इस मंदिर की तलहटी में महाराणा कुम्भा द्वारा निर्मित विष्णु मंदिर है,जिसे लोग ' मीराबाई का मंदिर' भी कहते हैं ।

❖ ऋषभदेव मंदिर धूलेव (उदयपुर)

- ऋषभदेवजी (आदिनाथ जी) का मंदिर धूलेव (उदयपुर) में स्थित है।
- वैष्णव धर्म के अनुयायी, ऋषभदेव जी को विष्णु का अवतार मानते हैं।
- आदिवासी लोग ऋषभदेवजी को 'कालाजी ' के नाम से जानते हैं।
- इस मन्दिर में सर्वाधिक केसर का भोग लगने के कारण इसे केसरियानाथ जी का मंदिर भी कहते हैं।
- यह मंदिर कोयल नदी के तट पर स्थित है तथा 1100 खम्भों पर बना है।
- इस मन्दिर में 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की पद्मासन मुद्रा में मूर्ति है।
- यहाँ पर चैत्र कृष्ण अष्टमी को मेला भरता है। यहाँ दिगम्बर, श्वेताम्बर, वैष्णव, शैव मन्दिर हैं।
- भारत का यह एकमात्र ऐसा मंदिर है जिसमें वैष्णव तथा मुस्लिम समान रूप से पूजा करते हैं।
- कोर्ट के आदेशानुसार मंदिर की पूजा जैन करते है इस कारण यह मन्दिर जैनों व भील जनजाति के मध्य विवादित बना हुआ है।

❖ जगत अम्बिका मन्दिर (उदयपुर)

- इस मन्दिर का निर्माण गुहिल वंशीय राजा अल्लट ने लगभग 925 ई. में करवाया।
- इस मन्दिर में दुर्गा के प्रमुख रूपों में एक रूप महिषासुरमर्दिनी रूप सर्वप्रमुख है।
- इस मन्दिर में नृत्य करते हुए गणपति की विशाल प्रतिमा स्थित है।
- इसे राजस्थान के मंदिरों की मणि माला का चमकता मोती भी कहा जाता है।

- **राजस्थान के प्रमुख नृत्य**

➢ **शास्त्रीय नृत्य**

- राजस्थान का एकमात्र शास्त्रीय नृत्य ' कथक ' हैं ।
- कथक नृत्य के प्रवर्तक भानुजी को माना जाता हैं।
- जयपुर घराना कथक नृत्य का आदिम घराना हैं।
- वर्तमान में कथक नृत्य उत्तर भारत का शास्त्रीय नृत्य हैं कथक नृत्य के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार बिरजू महाराज हैं।
- अन्य कलाकार प्रेरणा श्रीमाली , उदयशंकर ।

➢ **लोकनृत्य**

- लोकनृत्य वह कला हैं, जिसके द्वारा हाव-भाव, अंग संचालन, भाव भंगिमाओं के माध्यम से मनोदशा को व्यक्त करना एवं आनंद व उमंग से भरकर सामूहिक रूप से किए जाने वाले नृत्य ही लोकनृत्य कहलाते हैं।

➢ राज्य के प्रमुख लोकनृत्य को चार भागों में विभाजित किया गया हैं ।

1. **जनजातीयों के नृत्य**
2. **व्यवसायिक लोकनृत्य**
3. **जातीय नृत्य**
4. **क्षेत्रिय नृत्य**

❖ **राजस्थान के क्षेत्रीय लोकनृत्य**

➢ **घूमर**

- ' घूमर ' शब्द की उत्पत्ति ' घुम्म ' से हुई हैं , जिसका अर्थ होता हैं , ' लहंगे का घेर ' ।
- घूमर में महिलाएं घेरा बनाकर ' घूमर लोकगीत ' की धुन पर नाचती हैं ।
- घूमर के साथ आठ मात्रा के कहरवे की विशेष चाल होती हैं , जिसे सवाई कहते हैं ।
- घूमर नृत्य की उत्पति मध्य एशिया के भरंग नृत्य से मानी जाती हैं ।
- यह राजस्थान का राजकीय नृत्य हैं ।
- यह नृत्य मारवाड़ व मेवाड़ में राजघराने की महिलाओं द्वारा गणगौर पर किया जाता हैं ।
- राजस्थान की संस्कृति का पहचान चिह्न बन चुका ' घुमर ' नृत्य राजस्थान के ' लोकनृत्यों की आत्मा ' कहलाता हैं।
- इसे सिरमौर नृत्य व नृत्यों की आत्मा सामंतशाही नृत्य , रजवाड़ी नृत्य , महिलाओं का सर्वाधिक लोकप्रिय नृत्य कहते हैं ।
- यह गरबा नृत्य की तरह किया जाता हैं ।
- घूमर- साधारण स्त्रियों द्वारा किया जाता हैं।
- झूमरिया- यह बालिकाओं द्वारा किया जाता हैं।

➢ **झूमर नृत्य**

- हाड़ौती क्षेत्र में स्त्रियों द्वारा मांगलिक अवसरों एवं त्यौहारों पर किया जाने वाला गोलाकार नृत्य जो डाण्डियों की सहायता से किया जाता हैं।

➢ **घुमरा नृत्य**

- इसे भील जनजाति की महिला करती हैं।
- यह गरबा जैसा होता हैं।
- यह मांगलिक अवसर पर किया जाता हैं ।
- यह अर्द्ध वृताकार घेरे में महिलायें करती हैं ।
- इस नृत्य में 2 दल होते हैं जिसमें एक दल गाता हैं तथा दूसरा नाचता हैं।

➢ **घूमर-घूमरा नृत्य**

- घूमर - घूमरा नृत्य राजस्थान का एकमात्र शोक सूचक नृत्य हैं।
- जो केवल वागड़ क्षेत्र के कुछ ब्राह्मण समुदाय में किया जाता हैं ।

ISION NOTES
NLY THE BEST WILL DO

➢ **ढोल नृत्य**

- राजस्थान के जालौर क्षेत्र में शादी के अवसर पर पुरुषों के द्वारा सामूहिक नृत्य करते हुए विविध कलाबाजियाँ दिखाते हैं।
- इस नृत्य को प्रकाश में लाने का श्रेय जयनारायण व्यास को जाता हैं।

- यह नृत्य ढोली, सरगरा, माली, भील आदि जातियों द्वारा किया जाता है।
- इस नृत्य में कई ढोल एवं थालियाँ एक साथ बजाए जाते हैं।
- ढोलवादकों का मुखिया थाकना शैली' में ढोल बजाना प्रारम्भ करता है।

➢ घुड़ला नृत्य

- घुड़ला नृत्य विशेष रूप से जोधपुर जिले में किया जाता है ।
- घुड़ला नृत्य युवतियों के द्वारा किया जाता है ।
- घुड़ला नृत्य में स्त्रियाँ सुंदर शृंगार करके गोलाकार पथ पर नृत्य करती है ।
- घुड़ला नृत्य करते समय महिलाओं के सिर पर छिद्रित मटके रखे होते है । जिनमें जलता हुआ दीपक रखा जाता है । इस मटके को ही घुड़ला कहते हैं ।
- शीतला अष्टमी (चैत्र कृष्णा -8) पर घुडले का त्यौहार मनाया जाता है ।
- घुड़ला नृत्य को सर्वप्रथम मारवाड़ में घुड़ले खाँ की बेटी गिंदोली ने गणगौर उत्सव के समय शुरू किया था ।
- यह नृत्य दिन में नहीं अपितु रात्रि में किया जाता है ।
- इसमें चाल मंद व मादक होती है व घुड़ले को नाजुकता से संभाला जाता है , जो दर्शनीय है ।

- **घुड़ला नृत्य से एक कथा जुड़ी हुई है-** एक बार मारवाड़ के पीपाड़ा नामक स्थान पर स्त्रियाँ तालाब पर गौरी पूजन कर रही थी तभी अजमेर का सूबेदार मल्लू खाँ 140 कन्याओं का हरण करके ले जाता है । जोधपुर नरेश सातल देव ने इनका पीछा किया । इनका भयंकर युद्ध हुआ , जिसमें मल्लू खाँ के सेनापति घुडले का सिर छिद्रित कर सातल देव द्वारा लाया गया तब से यह नृत्य किया जाता है ।

➢ डांडिया नृत्य

- यह मारवाड़ का प्रतिनिधि नृत्य है, जिसमें 10 – 15 पुरुष विभिन्न प्रकार की वेशभूषा में स्वांग भरकर गोले में डंडियों को आपस में टकराते हुए नृत्य करते हैं।
- यह मूलत : गुजरात का है।
- राजस्थान में यह मारवाड़ का प्रसिद्ध है।
- यह होली के बाद खेलते हैं।
- यह पुरुष प्रधान नृत्य है इसमें शहनाई व नगाड़ा मुख्य वाद्य होता है।
- इस नृत्य में बड़ली के भैरुजी का गुणगान किया जाता है।
- इस नृत्य में धमाल गीत गाये जाते हैं।

➢ झाँझी नृत्य

- झाँझी नृत्य मारवाड़ क्षेत्र में महिलाओं के द्वारा किया जाता है ।
- झाँझी नृत्य के अन्तर्गत छोटे मटकों मे छिद्र करके महिलाएं समूह में उनको धारण करके यह नृत्य करती है।

➢ लुम्बर नृत्य

- यह नृत्य स्त्रियों द्वारा होली पर किया जाता है ।
- यह नृत्य जालौर का प्रसिद्ध है ।
- इस नृत्य में ढोल , चंग वाद्य यंत्र काम में लिये जाते हैं ।

➢ **गैर नृत्य**

- यह मुख्यतः फाल्गुन मास में भील पुरुषों के द्वारा किया गोल घेरे की आकृति में होने के कारण इस नृत्य का नाम घेर पड़ा । जो आगे चलकर गैर कहलाया ।
- गैर नृत्य करने वाले नृत्यकार गैरिये कहलाते हैं ।
- मेवाड़ व बाड़मेर क्षेत्र में गैर नृत्य किया जाता है ।
- यह नृत्य होली के अवसर पर किया जाता है ।
- गैर नृत्य के प्रमुख वाद्य यन्त्र ढोल - बाकिया - थाली है ।
- प्रत्युत्तर में गाये जाने वाले शृंगार रस एवं भक्ति रस के गीत फाग कहलाते हैं ।
- गैर नृत्य में प्रयुक्त होने वाली छड को खाडा कहा जाता है ।
- मेवाड़ में लाल / केसरिया पगड़ी पहनी जाती है ।
- बाड़मेर में सफेद आंगी (लम्बा फ्राक) कमर पर चमड़े का पट्टा व तलवार आदि लेकर नृत्य किया जाता है ।
- गैर नृत्य की प्रमुख विशेषता विचित्र वेशभूषा का प्रदर्शन है ।
- भीलवाड़ा का **घूमर गैर** अत्यन्त प्रसिद्ध है ।
- मेणार / मेनार गाँव (उदयपुर) के ऊकारेश्वर चौराहे पर चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की द्वितीया / जमरा बीज को **तलवारों की गैर** खेली जाती है ।
- नाथद्वारा (राजसमंद) में शीतला सप्तमी (चैत्र कृष्ण सप्तमी) से एक माह तक गैर नृत्य का आयोजन होता है ।
- ***आंगी - बांगी गैर नृत्य*** यह चैत्र शुक्ल तृतीया के दिन किया जाता है । यह गैर लाखेटा गाँव (बाड़मेर) की प्रसिद्ध है ।

➢ **बिंदौरी नृत्य**

- राज्य के झालावाड़ क्षेत्र में होली या विवाह के अवसर पर गैर के समान किया जाने वाला लोकनृत्य।
- यह पुरुष प्रधान नृत्य हैं।

➢ **चंग नृत्य**

- शेखावाटी क्षेत्र में होली के समय पुरुषों द्वारा किया जाने वाला सामूहिक लोकनृत्य, जिसमें प्रत्येक पुरुष चंग की थाप पर गाते हुए नाचते हैं।
- इस नृत्य में धमाल गीत गाये जाते हैं।

➢ **गींदड़**

- शेखावाटी क्षेत्र का सबसे लोकप्रिय एवं बहुप्रचलित लोकनृत्य, जो होली से पूर्व 'डांडा रोपण' से प्रारम्भ होकर होली के बाद तक चलता है।
- यह पुरुष प्रधान नृत्य हैं।
- गींदड़ नाचने वालों को 'गींदड़िया' तथा स्त्रियों का स्वांग करने वालों को 'गणगौर' कहा जाता है।
- नृत्य में विभिन्न प्रकार के स्वांग करते हैं जिसमें सेठ-सेठानी, दूल्हा दुल्हन, डाकिया-डाकिन, के स्वांग प्रमुख हैं।

➢ **ढप नृत्य**

- बसंत पंचमी पर शेखावटी क्षेत्र में ढप व मंजीरे बजाते हुए किया जाने वाला नृत्य ढप नृत्य कहलाता है।

➢ **लहुर नृत्य**

इंटरनेशनल अवार्ड फॉर वर्ल्ड अण्डर स्टेण्डिंग एण्ड पीस पुरस्कार प्राप्त हुए।

राजस्थान इतिहास की प्रसिद्ध महिला व्यक्तित्व

अंजना देवी चौधरी

अंजना देवी चौधरी का जन्म सीकर जिले के श्रीमाधोपुर में हुआ। राजस्थान सेवा संघ के कार्यकर्ता रामनारायण चौधरी से इनका विवाह हुआ। अंजना देवी ने बिजौलिया तथा बेगूं किसान आंदोलन में महिलाओं का नेतृत्व किया। 1921-24 में मेवाड़, बूंदी राज्यों की स्त्रियों में राष्ट्रीयता, समाज सुधार की भावना को बढ़ावा दिया। 1924 ई. में बिजौलिया में लगभग 500 स्त्रियों के जत्थे (दल) का नेतृत्व करके से किसानों को छुड़या | यह राजस्थान में पहली भारतीय कांग्रेस नेता थी, जिन्हें ब्रिटिश सरकार ने गिरफ्तार किया था | इन्हें बूंदी राज्य से निर्वासित भी होना पड़ा। 1934-36 ई. तक अजमेर के नारेली आश्रम में रह कर हरिजन सेवा कार्यों में भाग लिया था |

रतन शास्त्री

रतन व्यास का जन्म खाचरोद मध्य प्रदेश में हुआ। इनके पिता का नाम रघुनाथ जी व्यास था | इनका विवाह हीरालाल शास्त्री से हुआ। रतन शास्त्री ने सन् 1939 ई. में जयपुर राज्य प्रजामण्डल के सत्याग्रह आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और सन् 1942 ई. के भारत छोड़ो आंदोलन में भूमिगत कार्यकर्ताओं और उनके परिवारों की सेवा की। सन् 1955 ई. में इन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया। 1975 ई. में पद्म विभुषण से सम्मानित राजस्थान की प्रथम महिला बनी।

नगेन्द्रबाला

नगेन्द्रबाला केसरीसिंह बारहठ की पोत्री थी। 1941-1947 ई. तक किसान आंदोलन में सक्रिय रही। स्वतंत्रता के पश्चात् ये कोटा की जिला प्रमुख रहीं। इन्हें राजस्थान की प्रथम महिला जिला प्रमुख होने का गौरव प्राप्त है। ये राजस्थान विधानसभा की सदस्य भी रही हैं।

जानकी देवी बजाज

जानकी देवी का जन्म मध्यप्रदेश के जावरा कस्बे में हुआ। इनका विवाह जमनालाल बजाज के साथ हुआ और इन्हें वर्धा में आना पड़ा। बजाज जी के देहान्त के बाद इनको गौसेवा संघ की अध्यक्ष बनाया गया। ये जयपुर प्रजामण्डल के 1944 ई. के अधिवेशन की अध्यक्ष चुनी गई। विनोबा भावे के भूदान आंदोलन के दौरान 108 कुओं का निर्माण करवाया। 1956 ई. में सरकार ने इन्हें 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया।

नारायणी देवी वर्मा

नारायणी देवी का जन्म मध्य प्रदेश के सिंगोली कस्बे में हुआ था । इनके पिता रामसहाय भटनागर थे | इनका विवाह श्री माणिक्यलाल वर्मा से हुआ। बिजौलिया किसान आंदोलन के समय इन्हें कुम्भलगढ़ के किले में बन्दी बना लिया गया। नवम्बर 1944 ई. में महिला शिक्षा तथा जागृति के लिए भीलवाड़ा में महिला आश्रम नाम की संस्था स्थापित कर महिलाओं के सर्वांगीण विकास का कार्य अपने हाथ में लिया। 1952-53 में माणिक्य लाल वर्मा के साथ मिलकर आदिवासी कन्या छात्रावास की स्थापना की | 1970 में राज्यसभा से निर्वाचित किया गया।

शांता त्रिवेदी

शांता देवी का जन्म नागपुर (महाराष्ट्र) में हुआ था। इनका विवाह उदयपुर के परसराम त्रिवेदी के साथ हुआ। शांता त्रिवेदी ने 1947 ई. में उदयपुर में राजस्थान महिला परिषद की स्थापना की ताकि महिलाओं का समुचित विकास हो सके | और यह उदयपुर नगर परिषद और नगर निगम की निर्वाचित सदस्य रही|

मिस लुटर

मिस लूटर का पूरा नाम लिलियन गोडाफ्रेडा डामीथ्रोन लूटर था। इनका जन्म क्यामो, बर्मा में हुआ था। द्वितीय विश्व युद्ध के समय ये भारत आ गयी। उन्हीं दिनों जयपुर की महारानी गायत्री देवी ने राजपूत घराने की लड़कियों की शिक्षा के लिए एक स्कूल शुरू किया। मिस लूटर को 1934 ई. में महारानी गायत्री देवी को स्कूल में प्राचार्य पद पर नियुक्त किया गया। वे जीवन पर्यन्त इस पद पर रही। महिला जगत में शिक्षा के प्रसार के लिए भारत सरकार ने 1970 ई. में इन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया। 1976 ई. में ब्रिटिश सरकार ने भी महिला शिक्षा के लिए सम्मानित किया |

कालीबाई

डूंगरपुर जिले के रास्तापाल गांव की भील कन्या कालीबाई अपने शिक्षक सेंगाभाई को बचाने के

प्रयास में पुलिस द्वारा गोलियों से छलनी कर दी गई। इनकी मृत्यु 20 जून, 1947 हुई। रास्तापाल में इनकी स्मृति में एक स्मारक बना हुआ है।

किशोरी देवी

महिलाओं के प्रति अमानवीय व्यवहार करने वालों के विरोध में सीकर जिले के कटराथल नामक स्थान पर किशोरी देवी की अध्यक्षता में एक विशाल महिला सम्मेलन 1934 ई. में आयोजित किया गया। जिसमें क्षेत्र की लगभग 10,000 महिलाओं ने भाग लिया। किशोरी देवी स्वतंत्रता सेनानी सरदार हरलाल सिंह खर्रा की पत्नी थी।

श्रीमती सत्यभामा

बूंदी के स्वतंत्रता सेनानी नित्यानन्द नागर की पुत्रवधू सत्यभामा ने ब्यावर अजमेर आंदोलन (1932 ई) का नेतृत्व किया। सत्यभामा को गांधी जी की मानस पुत्री के रूप में भी जाना जाता है।

कमला देवी

इनको राजस्थान की प्रथम महिला पत्रकार के रूप में जाना जाता है। इन्होंने अजमेर से प्रकाशित होने वाले प्रकाश पत्र से लेखन कार्य किया।

खेतूबाई

बीकानेर के स्वतंत्रता सेनानी वैद्य मधाराम की बहन जिन्होंने दूधवा खारा (चुरू)किसान आंदोलन में महिलाओं का नेतृत्व किया और आजीवन खादी धारण करने का प्रण लिया।

रमा देवी

इनका जन्म जयपुर में गंगासहाय के घर में हुआ। ये मात्र 11 वर्ष की आयु में विधवा हो गई। बाद में गांधी विचारधारा रखने वाले नेता तादूराम जोशी से पुनर्विवाह हुआ। विवाह के बाद इन्होंने खादी पहनना प्रारम्भ किया तथा नौकरी छोड़ पति के साथ राजस्थान सेवा संघ का कार्य किया। 1931 ई. में बिजौलिया किसान आंदोलन में भाग लिया और इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था तथा 1930 के सत्याग्रह और 1932 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया और जेल गयीं।

प्रश्न - उस क्रांतिकारी महिला का नाम बताइए जिसने बिजौलिया किसान आंदोलन में भाग लिया और इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था तथा 1930 के सत्याग्रह और 1932 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया और जेल गयीं।

1) रतन शास्त्री
2) किशोरी देवी
3) रमा देवी
4) अंजना देवी चौधरी (RAS Pre. 2021)

लक्ष्मीदेवी आचार्य

कलकत्ता में स्थापित बीकानेर प्रजामण्डल की संस्थापक सदस्या और अध्यक्ष भी रही। सविनय अवज्ञा आंदोलन और स्वदेशी आंदोलन में भाग लिया।

पन्नाधाय

पन्नाधाय मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह की धाय मां थी। मेवाड़ के सामन्त बनवीर ने महाराणा विक्रमादित्य की हत्या कर युवराज उदयसिंह की हत्या का भी प्रयास किया। पन्नधाय ने अपने पुत्र चंदन का बलिदान देकर उदयसिंह को किले से बाहर भेजकर उसकी प्राण रक्षा की।

गोरां धाय

गोरां धाय ने जोधपुर के अजीतसिंह को औरंगजेब से बचाने के लिए अपने पुत्र का बलिदान देने के कारण इन्हें मारवाड़ की पन्ना धाय भी कहा जाता है।

हाड़ी रानी (सहल कंवर)

सलूम्बर (मेवाड़) के जागीरदार रतनसिंह चूंडावत की पत्नी जिसने अपना सिर काटकर निशानी के रूप में युद्ध में जाते हुए पति को दे दिया था।

रानी पद्मिनी

रानी पद्मिनी चित्तौड़ की रानी थी, जिन्हें पद्मावति के नाम से जाना जाता है जिनके पति रतन सिंह थे। इनकी साहस और बलिदान की गौरवगाथा की

नोट – प्रिय उम्मीदवारों, यहाँ हमने केवल SAMPLE ही दिया है, पूरा टॉपिक नही दिया है / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल कीजिए या लिंक पर क्लिक करें / दोस्तों, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "राजस्थान CET (Graduation level)" की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे और आप "INFUSION NOTES" के साथ इस परीक्षा में जरूर सफल होंगे, धन्यवाद /

RAS Pre. 2021 की परीक्षा में हमारे नोट्स में से 74 प्रश्न आये थे , जबकि cutoff मात्र 64 प्रश्न पर गयी थी /

संपर्क करें – 8504091672, 8233195718,9694804063, 7014366728

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
REET (लेवल -I, 2)	2021	98 (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like REET, UPSC, SSC Etc.

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. 2021 – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

FREE SAMPLE

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें /

संपर्क करें- 7014366728, 8233195718, 9694804063, 8504091672

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/rajasthan-cet-notes-graduation
PHONE NUMBER	+918504091672 9887809083 +918233195718 9694804063
TELEGRAM	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें	https://wa.link/kmk3lu

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO